NEKIYAN BARBAD HONE SE BACHAIYE (HINDI)

नेकियां बरबाद होने से बचाइये

(मअ़ 31 हि़कायात)

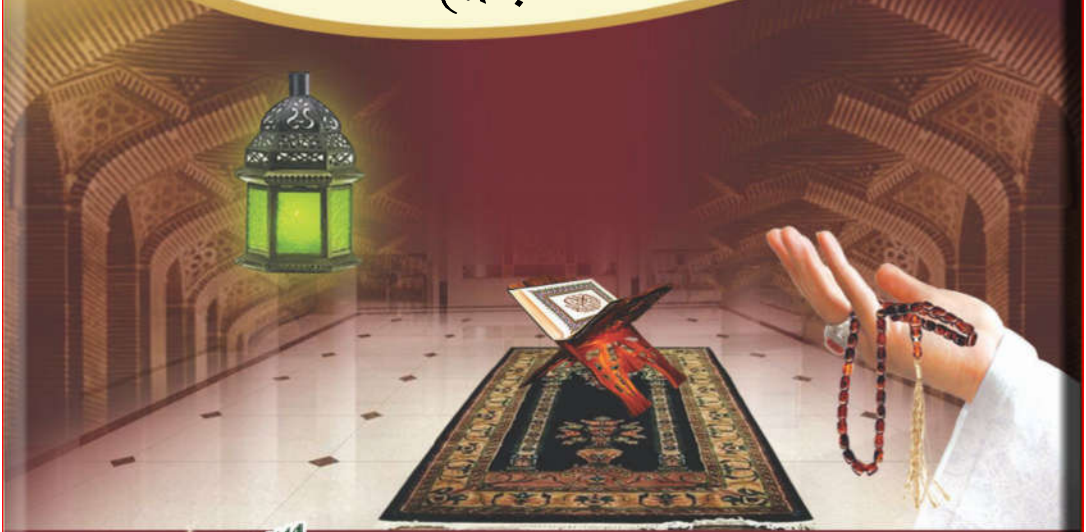

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**नेकियां बरबाद होने से बचाइये**" उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआदत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ॽ = ئ	॒ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़िरिश्तों की ज़ियारत

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन साबित मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं क़िब्ला रुख़ बैठ कर दुरूदे पाक के मौज़ूअ़ पर मज़्मून तरतीब दे रहा था। अचानक मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई और मेरी आंख लग गई। मैं ने ख़्वाब में **अल्लाह** तआ़ला के मुक़र्रब फ़िरिश्तों हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام, हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام, हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत की। (तीन मुक़र्रब फ़िरिश्तों से गुफ़्तगू का ज़िक्र करने के बा'द शैख़ अह़मद बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मैं ने हज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा दे कर इल्तिजा करता हूं कि आप मेरी जान निकालते वक़्त मुझ पर नर्मी फ़रमाएं। फ़रमाया : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो।**

(سعادۃ الدارین، ص ۱۲٤ ملخصاً)

आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस
बस है येही आसरा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(हिकायत : 1)

लकड़ी का बॉक्स

एक शख़्स माल कमाने की ग़रज़ से बैरूने मुल्क गया, वहां उस ने लकड़ी का एक पुराना बॉक्स (Box) ख़रीद कर उसे ताला लगाया और अपनी रिहाइश गाह में रख लिया और जो कुछ कमाता अपनी ज़रूरिय्यात के लिये रक़म अलग करने के बा'द बक़िय्या कमाई एक सूराख़ के ज़रीए बॉक्स में डाल दिया करता, जब काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो उस ने सोचा : अब तो अच्छी ख़ासी रक़म जम्अ़ हो गई होगी, चुनान्चे, उस ने ख़ुशी ख़ुशी अपना बॉक्स खोला तो येह देख कर सर पकड़ लिया कि उस में दीमक (Termites) लगी हुई थी जिस ने उस के करन्सी नोटों में से कुछ को मुकम्मल और बक़िय्या को जुज़्वी तौर पर चाट कर तबाह कर डाला था और वोह नोट अब उस के किसी काम के नहीं रहे थे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस फ़र्ज़ी हिकायत से हमें येह दर्स मिला कि कमाने के बा'द कमाई को बचाना भी ज़रूरी है और इस के लिये उसे हर ऐसी चीज़ से दूर रखना चाहिये जो उस को ख़त्म या कम कर सकती हो, येही मुआ़मला नेकियां कमाने का है कि नेकियां कमाने के बा'द उन नेकियों को उख़रवी ज़िन्दगी के लिये महफ़ूज़ रखा जाए और हर ऐसे काम से बचा जाए जिस की वज्ह से नेकियों का सवाब ज़ाएअ़ या कम हो सकता हो। नफ़्सो शैत़ान इन्सान को नेकी से रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगाते हैं, अगर इन्सान उन के वार नाकाम कर के नेकी करने में कामयाब हो भी जाए तो उन की कोशिश होती है कि इन्सानी नेकी ज़ख़ीरए आख़िरत में जम्अ़ न होने

www.dawateislami.net

पाए, इस लिये वोह इन्सान से ऐसी ग़लती करवा देते हैं जिस की वज्ह से नेकी का सवाब बिल्कुल ख़त्म या कम हो जाता है। क़ुरआने करीम और मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन में ऐसी कई चीज़ों को बयान किया गया है, मसलन **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ فَاِنَّ الْحَسَدَ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ या'नी ह़सद से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसे आग खुश्क लकड़ी को। (ابوداؤد،کتاب الادب،باب فی الحسد،۴/۳۶۰،حدیث:۴۹۰۳)

ज़ेरे नज़र किताब में इसी नोइय्यत की 28 चीज़ों का बयान ज़रूरी वज़ाह़त के साथ किया गया है, मौज़ूअ़ की मुनासबत से कमो बेश 83 रिवायात और 31 ह़िकायात भी शामिल की गई हैं। इस किताब का नाम शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **"नेकियां बरबाद होने से बचाइये"** रखा है जब कि दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के इस्लामी भाई ने इस की शरई तफ़्तीश फ़रमाई है।

इस रिसाले को खुद भी पढ़िये और दूसरों को पढ़ने की तरग़ीब दीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

(1) इस्लाम को छोड़ देना (इर्तिदाद)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लाम वोह सच्चा मज़्हब है जो हमारी दुन्यवी व उख़्रवी कामयाबी का ज़ामिन है। इस्लाम बच्चों, जवानों, बूढ़ों, मर्दों, औ़रतों, माओं, बेटियों, ह़ाकिमो मह़्कूम ह़त्ता कि जानवरों तक के लिये अम्नो सलामती फ़राहम करता है। फ़र्द हो या मुआ़शरा ! दोनों के लिये इस्लाम बेहतरीन निज़ामे अ़मल है, येही वोह दीन है जो इस काइनात को पैदा करने वाले रब्बे करीम का पसन्दीदा दीन है। बड़ा ख़ुश नसीब है वोह शख़्स जिसे ईमान की दौलत मिली और वोह ईमान की सलामती के साथ दुन्या से रुख़्सत हुवा, उस की आख़िरी मन्ज़िल मक़ामे रह़मत या'नी जन्नत है और बड़ा ही बद नसीब है वोह शख़्स जो इस दौलत से मह़रूम रहा या नूरे इस्लाम से चमकने दमकने के बा'द कुफ़्र की तारीकियों में जा पड़ा, ऐसा शख़्स दुन्या व आख़िरत में ख़सारा पाने वाला है, उस की सारी नेकियां ख़त्म हो जाती हैं और हमेशा हमेशा के लिये उस का ठिकाना जहन्नम है। कुरआने करीम पारह 2, सूरए बक़रह की आयत 217 में फ़रमाने रब्बे अ़ज़ीम है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

(پ۲، البقرة:۲۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।*

www.dawateislami.net

मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" की पहली जिल्द के सफ़्हा 334 पर इस आयत के तह्त है : मुर्तद होने से तमाम अ़मल बाति़ल हो जाते हैं, आख़िरत में तो इस त़रह़ कि उन पर कोई अज्रो सवाब नहीं और दुन्या में इस त़रह़ कि शरीअ़त हुकूमते इस्लामिय्या को मुर्तद के क़त्ल का हुक्म देती है। मर्द मुर्तद हो जाए तो बीवी निकाह़ से निकल जाती है। मुर्तद शख़्स अपने रिश्तेदारों की विरासत पाने का मुस्तह़िक़ नहीं रहता, मुर्तद की ता'रीफ़ करना और उस से तअ़ल्लुक़ रखना जाइज़ नहीं होता। चूंकि मुर्तद होने से तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं लिहाज़ा अगर कोई ह़ाजी मुर्तद हो जाए फिर ईमान लाए तो वोह दोबारा ह़ज करे, पहला ह़ज ख़त्म हो चुका। इसी त़रह़ ज़मानए इर्तिदाद में जो नेकियां कीं वोह क़बूल नहीं। जो ह़ालते इर्तिदाद में मर गया वोह हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा जैसा कि आयत के आख़िर में هُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ फ़रमाया गया है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब फ़रमाए। याद रखें कि मुर्तद होना बहुत सख़्त जुर्म है। अफ़्सोस कि आज कल मुसलमानों की अकसरिय्यत दीन के बुन्यादी अ़क़ाइद से ला इल्म है। शादी व मर्ग और हंसी मज़ाक़ के मौक़अ़ पर कुफ़्रिय्या जुम्लों की भरमार है। गाने बाजे, फ़िल्में ड्रामे ख़ुसूसन मिज़ाह़िया ड्रामे कुफ़्रिय्यात का बहुत बड़ा ज़रीआ़ हैं, इन चीज़ों से बचाने वाले उ़लूम का ह़ासिल करना फ़र्ज़ है।

(सिरातुल जिनान, 1/334)

चार क़िस्म के लोग

एक त़वील ह़दीसे पाक में नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया : औलादे आदम मुख़्तलिफ़ तृबक़ात पर पैदा की गई इन में से (1) बा'ज़ मोमिन पैदा हुवे ह़ालते ईमान पर ज़िन्दा रहे और मोमिन ही मरेंगे, (2) बा'ज़ काफ़िर पैदा हुवे ह़ालते कुफ़्र पर ज़िन्दा रहे और काफ़िर ही मरेंगे, (3) बा'ज़ मोमिन पैदा हुवे मोमिनाना ज़िन्दगी गुज़ारी और ह़ालते कुफ़्र पर रुख़्सत हुवे और (4) बा'ज़ काफ़िर पैदा हुवे काफ़िर ज़िन्दा रहे और मोमिन हो कर मरेंगे।

(ترمذی،کتاب الفتن،باب ما اخبر النبی۔۔۔الخ،٤ / ٨١،حدیث: ٢١٩٨)

बन्दा उस पर उठाया जाएगा जिस पर मरेगा

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : يُبْعَثُ كُلُّ عَبْدٍ عَلَى مَا مَاتَ عَلَيْهِ या'नी हर बन्दा उस ह़ालत पर उठाया जाएगा जिस पर मरेगा।

(مسلم،کتاب الجنة وصفة نعیمها،باب الامر بحسن الظن...الخ،ص١٥٣٨،حدیث:٢٨٧٨)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी ए'तिबार ख़ातिमे का है, अगर कोई कुफ़्र पर मरे तो कुफ़्र पर ही उठेगा अगर्चे ज़िन्दगी में मोमिन रहा हो, और अगर ईमान पर मरे तो ईमान पर उठेगा अगर्चे ज़िन्दगी में काफ़िर रहा हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 153)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस ह़दीस से येह नुक्ता अख़्ज़ किया है कि

www.dawateislami.net

बांसरी बजाने वाला क़ियामत के दिन अपनी बांसरी के साथ आएगा, शराबी अपने जाम के साथ जब कि मुअज़्ज़िन अज़ान देता हुवा आएगा। (التیسیر،۲/۵۰۷)

आग के सन्दूक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस किसी बद नसीब का कुफ़्र पर ख़ातिमा होगा उस को क़ब्र इस ज़ोर से दबाएगी कि इधर की पस्लियां उधर और उधर की इधर हो जाएंगी। काफ़िर के लिये इसी त़रह़ और भी दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। क़ियामत का पचास हज़ार सालह दिन सख़्त तरीन हौलनाकियों में बसर होगा, फिर उसे औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। जो गुनहगार मुसलमान दाख़िले जहन्नम हुवे होंगे उन को निकाल लिया जाएगा और दोज़ख़ में सिर्फ़ वोही लोग रह जाएंगे जिन का कुफ़्र पर ख़ातिमा हुवा था। फिर आख़िर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा कि उस के क़द बराबर आग के सन्दूक़ में उसे बन्द करेंगे फिर उस में आग भड़काएंगे और आग का क़ुफ़्ल (या'नी ताला) लगाया जाएगा फिर येह सन्दूक़ आग के दूसरे सन्दूक़ में रखा जाएगा और इन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी और उस में भी आग का क़ुफ़्ल लगाया जाएगा, फिर इसी त़रह़ उस को एक और सन्दूक़ में रख कर और आग का क़ुफ़्ल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा। मौत को एक मेंढे की त़रह़ जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान ला कर ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा। अब किसी को मौत नहीं आएगी। हर जन्नती हमेशा

www.dawateislami.net

हमेशा के लिये जन्नत में और हर दोज़ख़ी हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में ही रहेगा । जन्नतियों के लिये मसर्रत बालाए मसर्रत होगी और दोज़ख़ियों के लिये ह़सरत बालाए ह़सरत । (बहारे शरीअ़त, 1 / 170 मुलख़्ख़सन)

(हि़कायत : 2)

फिर तुम क्या करते

किसी ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से शिकायतन अ़र्ज़ की, कि चोर मेरे घर से तमाम माल चुरा कर ले गए । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : अगर शैत़ान तुम्हारे दिल में दाख़िल हो कर ईमान ले जाता तो फिर तुम क्या करते ?

(کیمیائے سعادت (فارسی)، ص ۸۰۵)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ हम तुझ से ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस का सुवाल करते हैं ।

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में
मदफ़न मेरा मह़बूब के क़दमों में बना दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) बारगाहे रिसालत में बे अदबी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान ऐसी अर्फ़ओ आ'ला है कि जिन की ज़ियारत करने वाले ख़ुश

www.dawateislami.net

नसीब सह़ाबी बन गए, जिन की तस्कीन से रोते हुवे हंस पड़ें, जिन के लुआ़बे दहन से मरीज़ों को शिफ़ा मिली, जिन के दर से आज भी ह़ाजतमन्द मुंह मांगी मुरादें पाते हैं, सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं बल्कि दरख़्त, जानवर और पथ्थर भी जिन का हुक्म बजा लाने में पेश पेश दिखाई दें, ऐसे शान वाले मदनी ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार के आदाब भी बहुत आ'ला हैं, कुरआने पाक पारह 26 सूरए हुजुरात की दूसरी आयत में इरशादे रब्बे पाक है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲

(پ۲۶، الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो ।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : इस आयत में हुज़ूर का इजलालो इकराम व अदबो एह़तिराम ता'लीम फ़रमाया गया और हुक्म दिया गया कि निदा करने (या'नी पुकारने) में अदब का

www.dawateislami.net

पूरा लिहाज़ रखें जैसे आपस में एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हैं इस त़रह़ न पुकारें बल्कि कलिमाते अदबो ता'ज़ीम व तौसीफ़ो तकरीम व अल्क़ाबे अ़ज़मत के साथ अ़र्ज़ करो जो अ़र्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

(ह़िकायत : 3)

वोह अहले जन्नत से हैं

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि येह आयत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ) के ह़क़ में नाज़िल हुई उन्हें सिक्ले समाअ़त (या'नी ऊंचा सुनने का मरज़) था और आवाज़ उन की ऊंची थी, बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी, जब येह आयत नाज़िल हुई तो ह़ज़रते साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूं, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ) से उन का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया, उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इ़ल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई, फिर आ कर ह़ज़रते साबित (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ) से इस का ज़िक्र किया, साबित ने कहा : येह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूं तो मैं जहन्नमी हो गया, ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ) ने येह ह़ाल ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि **वोह अहले जन्नत से हैं** !

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दरबारे रिसालत के आदाब रब्बे काइनात ने बयान फ़रमाए

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : दुन्यावी बादशाह अपने दरबारों के आदाब और इन में ह़ाज़िरी देने के क़वानीन ख़ुद बनाते हैं और अपने मुक़र्ररा ह़ाकिमों के ज़रीए़ रिआ़या से इन पर अ़मल कराते हैं कि जब हमारे दरबार में आओ तो इस त़रह़ खड़े हो, इस त़रह़ बात करो, इस त़रह़ सलामी दो। फिर जो कोई आदाब बजा लाता है उस को इन्आ़म देते हैं, जो इस के ख़िलाफ़ करता है बादशाह की त़रफ़ से सज़ा पाता है। फिर इन के येह सारे क़ाइदे सिर्फ़ इन्सानों पर ही जारी होते हैं। जिन्न, फ़िरिश्ते, हैवानात वग़ैरा को इन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं क्यूंकि उन पर उन की कोई सल्त़नत नहीं नीज़ येह सारे आदाब उस वक़्त तक रहते हैं जब तक बादशाह ज़िन्दा है, जहां उस की आंख बन्द हुई वोह दरबार भी ख़त्म, सारे आदाब भी फ़ना, अब नया दरबार है नए क़ाइदे।

लेकिन इस आस्मान के नीचे एक ऐसा दरबार भी है जिस के आदाब और जिस में ह़ाज़िर होने के क़ाइदे, सलामो कलाम करने के त़रीक़े ख़ुद रब तआ़ला ने बनाए, अपनी ख़िल्क़त को बताए कि ऐ मेरे बन्दो ! जब इस दरबार में आओ तो ऐसे ऐसे आदाब का ख़याल रखना और ख़ुद फ़रमाया कि अगर तुम ने इस के ख़िलाफ़ किया तो तुम को सख़्त सज़ा दी जाएगी। फिर लुत़्फ़ येह है कि अब वोह शाही दरबार हमारी आंखों से छुप गया, उस की चहल पहल हमारी निगाहों से ग़ाइब भी हो गई, उस शहनशाह ने हम से पर्दा भी फ़रमा लिया मगर उस के

www.dawateislami.net

आदाब अब तक वोही बाक़ी, उस का तुमतुराक़ इसी त़रह़ बर क़रार, फिर इस दरबार के क़वानीन फ़क़त़ इन्सानों पर ही जारी नहीं बल्कि वुस्अ़ते सल्त़नत का येह ह़ाल है कि फ़िरिश्ते बिग़ैर इजाज़त वहां ह़ाज़िर न हो सकें, जिन्नात झिजकते हुवे ह़ाज़िर हों, जानवर सजदे करें, बे जान कंकर और दरख़्त कलिमे पढ़ें और इशारे पर घूमें, चांद सूरज इशारों पर चलें, उस के इशारए अब्रू से बादल आ कर बरसें और दूसरा इशारा पा कर बादल फट जाएं, ग़रज़ येह कि हर अ़र्शी फ़र्शी (या'नी ज़मीनो आस्मान वाले) इस क़ाहिर हुकूमत के बन्दए बे ज़र। मुसलमानो ! मा'लूम है वोह दरबार किस का है ? वोह दोनों जहां के मुख़्तार, ह़बीबे किरदगार, कौनैन के शहनशाह, दारैन के मालिको मौला, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दरबार है। (रसाइले नईमिय्या, स. 113)

ह़यात व वफ़ात में कुछ फ़र्क़ नहीं

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : यक़ीन जानो कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्ची ह़क़ीक़ी दुन्यावी जिस्मानी ह़यात से वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे, उन की और तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत सिर्फ़ वा'दए ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिये थी, उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ नज़रे अ़वाम से छुप जाना है। इमाम मुह़म्मद इब्ने ह़ाज मक्की मदख़ल और इमाम अह़मद

www.dawateislami.net

क़स्त़लानी मवाहिबे लदुन्निय्या में और अइम्मए दीन رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين फ़रमाते हैं :

لَا فَرْقَ بَيْنَ مَوْتِهٖ وَحَيَاتِهٖ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ مُشَاهَدَتِهٖ لِاُمَّتِهٖ وَمَعْرِفَتِهٖ بِاَحْوَالِهِمْ وَنِيَّاتِهِمْ وَعَزَائِمِهِمْ وَخَوَاطِرِهِمْ وَذٰلِكَ عِنْدَهٗ جَلِيٌّ لَا خِفَاءَ بِهٖ

तर्जमा : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यात व वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वोह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उन की ह़ालतों, उन की निय्यतों, उन के इरादों, उन के दिलों के ख़यालों को पहचानते हैं और येह सब हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ऐसा रौशन है जिस में अस्लन पोशीदगी नहीं ।

इमाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तल्मीज़े इमाम मुह़क़्क़िक़ इब्नुल हुमाम "मन्सके मुतवस्सित़" और अ़ली क़ारी मक्की इस की शर्ह़ "मस्लके मुतक़स्सित़" में फ़रमाते हैं :

وَاَنَّهٗ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَالِمٌ بِحُضُوْرِكَ وَقِيَامِكَ وَسَلَامِكَ اَیْ بَلْ بِجَمِيْعِ اَفْعَالِكَ وَاَحْوَالِكَ وَارْتِحَالِكَ وَمَقَامِكَ

तर्जमा : बेशक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेरी ह़ाज़िरी और तेरे खड़े होने और तेरे सलाम बल्कि तेरे तमाम अफ़्आ़ल व अह़वाल व कूच व मक़ाम से आगाह हैं । (बहारे शरीअ़त, 1 / 1223)

(ह़िकायत : 4) इ़ज़्ज़तो हुर्मत आज भी वैसी है जैसी ह़याते ज़ाहिरी में थी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ على صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में गुफ़्त्गू के दौरान ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आवाज़ बुलन्द की तो आप ने उस से फ़रमाया : ऐ ख़लीफ़ा ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द मत करो, अल्लाह तआ़ला

www.dawateislami.net

ने बारगाहे रिसालत में आवाज़ें धीमी रखने वालों की मद्ह (या'नी ता'रीफ़) फ़रमाई है, चुनान्चे, पारह 26 सूरतुल हुजुरात की तीसरी आयते मुबारका में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ ۚ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝٣

(پ٢٦، الحجرات:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास, वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।*

जब कि आवाज़ें बुलन्द करने वालों की इन अल्फ़ाज़ में मज़म्मत बयान फ़रमाई है, चुनान्चे, इसी सूरत की चौथी आयते करीमा है :

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝٤ (پ٢٦، الحجرات:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं।*

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो हुर्मत यक़ीनन आज भी उसी त़रह़ है जिस त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी में थी। इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की इस गुफ़्त्गू से अबू जा'फ़र ख़ामोश हो गया।

(الشفاء، ٢٠/١٤١ ملخصاً)

तुझ से छुपाऊं मुंह तो करूं किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 226)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(3) एह्सान जताना

किसी ग़रीब की मदद कर देना, दुख्यारे का दुख बांटना, ग़रीब का इलाज करवाना या किसी भी त़रह़ किसी के काम आना बहुत ही अच्छा काम है लेकिन इस के बा'द उस पर बिला ज़रूरते शरई एह़सान जताना बहुत ही बुरा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى

(پ۳، البقرۃ:۲٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर ।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़त लिखते हैं : या'नी जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

जन्नत में नहीं जाएगा

ख़ातिमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : एह़सान जताने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत में नहीं जाएगा ।

(نسائی، کتاب الاشربة، الروایة فی ـــ الخ، ص۸۹۵، حدیث: ٥٦٨٣)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : या'नी येह लोग

www.dawateislami.net

अव्वलन जन्नत में जाने के मुस्तह़िक़ न होंगे। ख़याल रहे कि गुनाहे सग़ीरा हमेशा करने से कबीरा बन जाता है। शराब ख़ोरी ख़ुद ही सख़्त जुर्म है फिर इस पर हमेशगी डबल (Double) जुर्म।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 530)

(ह़िकायत : 5)

एह़सान का बदला चुकाया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बहुत बड़े सख़ी थे। एक दिन आप अपने घर के सिह़्न में मौजूद थे कि एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ इब्ने अ़ब्बास ! मेरा आप पर एक एह़सान है और मुझे इस के बदले की ह़ाजत है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे ग़ौर से देखा लेकिन पहचान न सके, दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा मुझ पर क्या एह़सान है ? उस ने अ़र्ज़ किया : एक दफ़्आ़ मैं ने आप को देखा कि आप ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें के पास मौजूद थे, आप का ग़ुलाम आप के लिये कुंवें से आबे ज़म ज़म निकाल रहा था और सूरज की तमाज़त (या'नी गर्मी) आप को झुल्सा रही थी, येह देख कर मैं ने अपनी चादर से आप पर साया कर दिया यहां तक कि आप आबे ज़म ज़म पी कर फ़ारिग़ हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : हां ! मुझे येह बात याद आ गई, फिर आप ने ग़ुलाम से फ़रमाया : तुम्हारे पास कितना माल मौजूद है ? उस ने अ़र्ज़ की : दो सौ दीनार और दस हज़ार दिरहम। इरशाद फ़रमाया : येह सब इसे दे दो और मैं नहीं समझता कि इन से इस के एह़सान का बदला पूरा हुवा है।

(المستطرف ١٠/٢٧٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4) ह़सद नेकियों को खा जाता है

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِیَّاکُمْ وَالْحَسَدَ فَاِنَّ الْحَسَدَ یَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ النَّارُ الْحَطَبَ या'नी ह़सद से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ी को। (ابوداؤد،کتاب الادب،باب فی الحسد،٤/٣٦٠،حدیث:٤٩٠٣)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : या'नी तुम माल और दुन्यवी इ़ज़्ज़त व शोहरत में किसी से ह़सद करने से बचो क्यूंकि ह़ासिद ह़सद की वज्ह से ऐसे ऐसे गुनाह कर बैठता है जो उस की नेकियों को उसी त़रह़ मिटा देते हैं जैसे आग लकड़ी को, मसलन ह़ासिद मह़सूद की ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है जिस की वज्ह से उस की नेकियां मह़सूद के ह़वाले कर दी जाती हैं, यूं मह़सूद की ने'मतों और ह़ासिद की ह़सरतों में इज़ाफ़ा हो जाता है।

(مرقاۃ المفاتیح،٨/ ٧٧٢،تحت الحدیث:٥٠٣٩ ملخصًا)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ह़सद व बुग़्ज़ ज़रीआ़ बन जाता है नेकियों की बरबादी का या'नी ह़ासिद ऐसे काम कर बैठता है जिस से नेकियां ज़ब्त़ हो जाएं या ह़ासिद व बुग़्ज़ वाले की नेकियां मह़सूद को दे दी जाएंगी येह ख़ाली हाथ रह जाएगा। ख़याल रहे कि कुफ़्र व इर्तिदाद के सिवा कोई गुनाह मोमिन की नेकियां बरबाद नहीं करता, हां ! नेकियों से गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं, रब तआ़ला फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। **(پ۱۲،ھود:۱۱٤)** (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 615)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ह़सद ह़ासिद को मह़्सूद की ग़ीबत करने और बुरा भला कहने तक ले जाता है बल्कि वोह उस का माल ज़ाएअ़ करने और जान से मारने की कोशिश भी करता है और येह सब काम ज़ुल्म हैं, रोज़े क़ियामत इन का ह़िसाब लिया जाएगा और इन के बदले में ह़ासिद की नेकियां ले ली जाएंगी।

(فیض القدیر،۳/۱٦۲،تحت الحدیث:۲۹۰۸)

तुलें मेरे आ'माल मीज़ां पे जिस दम
पड़े इक भी नेकी न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 6)

ह़सद के मारे यहूदियों ने झूट बोला

क़ुरआने करीम के पहले पारे की सूरए बक़रह, आयत 79 में इरशाद होता है :

فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ یَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَیْدِیْهِمْۗ ثُمَّ یَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِیَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًاؕ (پ۱، البقرۃ:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ख़राबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें येह ख़ुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम ह़ासिल करें।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

तौरात में येह सिफ़ात लिखी पाईं कि इन की आंखें सुर्मगीं, भंवें घनी, बाल घुंगराले और चेहरा निहायत ह़सीन होगा, येह देख कर उन्हों ने ह़सद और बुग़्ज़ की आग में जल कर येह सिफ़ात तौरात से मिटा दीं, बा'दे अज़ां मक्का से कुरैशियों के एक वफ़्द ने उन के पास जा कर उन से पूछा : तुम तौरात में उम्मी लक़ब नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की कुछ सिफ़ात पाते हो ? बोले : हां, हम येह लिखा पाते हैं कि उन का क़द लम्बा, आंखें नीली और बाल सीधे होंगे, येह सुन कर कुरैशी बोले : हम में तो ऐसा कोई नहीं है। (تفسیر ابن ابی حاتم ، سورۃ البقرۃ ، ١/١٥٤ ، تحت الآیۃ : ٧٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) महंगाई की तमन्ना करना

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ تَمَنّٰى عَلٰى اُمَّتِي الْغَلَاءَ لَيْلَةً وَاحِدَةً اَحْبَطَ اللّٰهُ عَمَلَهُ اَرْبَعِينَ سَنَةً या'नी जो मेरी उम्मत पर एक रात महंगाई होने की तमन्ना करे **अल्लाह** तआ़ला उस के चालीस बरस के नेक आ'माल को बरबाद कर देगा।

(کنزالعمال،جزء:٤،٢/٤٠،حدیث:٩٧١٧)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि इस फ़रमाने आ़लीशान का मक़्सूद उस काम से नफ़रत दिलाना और उस से डराना है ह़क़ीक़त में आ'माल का ज़ाएअ़ होना मुराद नहीं।

(فیض القدیر، ٦/١٤٠، تحت الحدیث:٨٦٠٤)

www.dawateislami.net

(ह़िकायत : 7)

एक के बदले दस

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن तो महंगी चीज़ें मुसलमानों को सस्ती बल्कि बा'ज़ औक़ात तो मुफ़्त मुहय्या करने की कोशिश किया करते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में क़ह़त़ पड़ा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों से फ़रमाया : तुम्हें कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचेगी यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस क़ह़त़ से नजात देगा। फिर जब अगला दिन हुवा तो उन के पास ख़ुश ख़बरी देने वाला आ गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास गन्दुम और सामाने ख़ूराक के एक हज़ार ऊंट आ रहे हैं। (फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास गन्दुम और दीगर खाने की चीज़ों के एक हज़ार ऊंट आए) तो अगले रोज़ ताजिर लोग आप के घर पहुंच गए और उन के दरवाज़े पर दस्तक दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बाहर तशरीफ़ लाए और उन से पूछा : तुम लोग क्या चाहते हो ? उन्हों ने कहा : हमें मा'लूम हुवा है कि आप के गन्दुम और दीगर अश्या के एक हज़ार ऊंट आए हैं, आप वोह हमें फ़रोख़्त कर दें ताकि मदीनए मुनव्वरा के ज़रूरत मन्दों पर रिज़्क़ की वुस्अ़त हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : अन्दर आ जाओ। वोह लोग अन्दर गए तो एक हज़ार ऊंटों का बोझ गन्दुम वग़ैरा की सूरत में आप के घर में पहुंच चुका था। आप ने उन से पूछा : तुम लोग मुल्के शाम के नर्ख़ों के मुत़ाबिक़ क्या नफ़्अ़

www.dawateislami.net

दोगे ? उन्हों ने कहा : दस रूपे के बारह रूपे देंगे या'नी दस रूपे पर दो रूपे नफ़्अ़। आप ने इरशाद फ़रमाया : मुझे इस से ज़ियादा नफ़्अ़ मिल रहा है। ताजिरों ने कहा : दस रूपे के चौदह रूपे ले लें। आप ने फ़रमाया : मुझे ज़ियादा मिलता है। उन्हों ने कहा : दस के पन्दरह ले लें। आप ने फ़रमाया : मुझे इस से ज़ियादा नफ़्अ़ मिल रहा है। उन्हों ने कहा : मदीने के ताजिर तो हम हैं, आप को कौन ज़ियादा नफ़्अ़ दे रहा है ? हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे एक रूपे पर दस रूपे मुनाफ़अ़ मिल रहा है, तुम इस से ज़ियादा दोगे ? उन्हों ने कहा : हम इतना मुनाफ़अ़ नहीं दे सकते। आप ने फ़रमाया : ऐ ताजिरों की जमाअ़त ! इस बात पर गवाह हो जाओ कि मैं ने येह तमाम अश्या खुर्दुनी मदीने के ज़रूरत मन्दों के लिये सदक़ा कर दी हैं। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं जब रात को सोया तो ख़्वाब में सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप ने नूर की चादर पहन रखी थी, मुबारक हाथों में नूर की छड़ी और पाउं मुबारक में जो ना'लैन थे उन के तस्मे भी नूरानी थे। मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की त़रफ़ मेरा इश्तियाक़ बढ़ता जाता है। सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं जल्दी में हूं, उ़स्मान ने एक हज़ार ऊंट का बोझ गन्दुम वग़ैरा सदक़ा किया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़स्मान का येह अ़मल क़बूल फ़रमा कर जन्नती हूर से उन का निकाह़ फ़रमाया है। (الریاض النضرۃ،۲/۴۳)

www.dawateislami.net

चालीस दिन ग़ल्ला रोकना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो चालीस दिन ग़ल्ला रोके कि उस के महंगा होने का इन्तिज़ार करे तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर हो गया, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बेज़ार हो गया। (مشکاۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الاحتکار، ۱/۵۳۶، حدیث: ۲۸۹۶)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : चालीस दिन का ज़िक्र ह़दबन्दी के लिये नहीं, ताकि उस से कम एह़तिकार (या'नी ग़ल्ला रोकना) जाइज़ हो, बल्कि मक़्सद येह है कि जो एह़तिकार का आ़दी हो जाए उस की येह सज़ा है। चालीस दिन कोई काम करने से आ़दत पड़ जाती है, इस लिये चालीस दिन नमाज़े बा जमाअ़त की तक्बीरे ऊला पाने की बड़ी फ़ज़ीलत है कि इतनी मुद्दत में वोह जमाअ़त का आ़दी हो जाएगा। हर जगह एह़तिकार में येह ही क़ैद है कि ग़ल्ले की गिरानी के लिये उस का ज़ख़ीरा करना ममनूअ़ है, वोह भी जब कि लोग तंगी में हों और येह बहुत ज़ियादा गिरानी का इन्तिज़ार करे कि ख़ूब नफ़्अ़ से बेचे। मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं : जो बादशाह की ह़िफ़ाज़त से निकल जाए उस का ह़ाल क्या होता है, जो चाहे उस का माल लूट ले, जो चाहे उस का ख़ून कर दे, जो चाहे उस के ज़न व फ़रज़न्द को हलाक कर दे तो जो रब तआ़ला की अमान व अ़ह्द से निकल गया, उस की बदह़ाली

www.dawateislami.net

का अन्दाज़ा नहीं हो सकता, लिहाज़ा येह एक जुम्ला हज़ारहा अ़ज़ाबों का पता दे रहा है, रब तआ़ला मह़फ़ूज़ रखे ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 290)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ قَذْفَ الْمُحْصَنَةِ يَهْدِمُ عَمَلَ مِائَةِ سَنَةٍ या'नी किसी पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना सौ साल की नेकियों को बरबाद कर देता है । (مُعْجَم كَبِير، ٣ / ١٦٨، حديث: ٣٠٢٣)

इस ह़दीसे पाक से उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो सिर्फ़ शक की बिना पर पारसा औ़रतों पर तोहमते ज़िना बांध बैठते हैं । ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अगर बिलफ़र्ज़ वोह शख़्स सौ साल तक ज़िन्दा रह कर इ़बादत करे तो भी येह बोहतान उस के उन आ'माल को ज़ाएअ़ कर देगा । इस फ़रमाने आ़लीशान में इस अ़मल पर सख़्त तम्बीह और ज़बान की ह़िफ़ाज़त पर भरपूर तरग़ीब है । इस त़रह़ की दीगर रिवायात पर क़ियास करते हुवे ज़ाहिर येह है कि सौ से मुराद मख़्सूस अ़दद नहीं बल्कि कसरत है, इस रिवायत में मौजूद शदीद वई़द से येह नतीजा निकाला गया है कि येह अ़मल कबीरा गुनाह है । (فيض القدير، ٢/ ٦٠١، تحت الحديث: ٢٣٤٠)

www.dawateislami.net

पीप और ख़ून में रखेगा

शहनशाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान के बारे में ऐसी बात कहे जो उस में नहीं पाई जाती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **रदग़तुल ख़बाल** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल आए।

(ابوداوٗد،کتاب الاقضیه،باب فیمن یعین--الخ، ۳/۴۲۷، حدیث : ۳۵۹۷)

रदग़तुल ख़बाल जहन्नम में एक जगह है जहां जहन्नमियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 313)

(ह़िकायत : 8)

हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा

पाक दामन औ़रतों पर बदकारी की तोहमत धरने वाले इस ह़िकायत को ग़ौर से पढ़ें और अपने किये पर तौबा करें, चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى शर्हुस्सुदूर में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने ख़्वाब में जरीर ख़त़फ़ी को देखा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ? तो उन्हों ने कहा : मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैं ने पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? कहा : उस तक्बीर कहने पर जो मैं ने एक जंगल में कही थी। मैं ने पूछा : फ़र्ज़दक़ का क्या हुवा ? तो उन्हों ने कहा : अफ़्सोस ! पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाने के बाइ़स वोह हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा।

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 296 बह़वाला شَرحُ الصُّدُور،ص۲۸۵،البدایۃ والنھایۃ،۶/۴۰۹)

www.dawateislami.net

आह ! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर बोहतान बांधे होंगे !

हर जुर्म पे जी चाहता है फूट कर रोऊं

अफ़्सोस मगर दिल की क़सावत नहीं जाती

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) रियाकारी

हमारा हर नेक अ़मल अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये होना चाहिये, नामो नमूद और वाह वाह की ख़्वाहिश, शोहरत की तड़प हमारे किये कराए पर पानी फेर सकती है, क़ुरआने करीम पारह 12 सूरए हूद की आयत 15 और 16 में इरशाद होता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَ حَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ (پ۱۲، ھود:۱۵،۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और उस में कमी न देंगे, येह हैं वोह जिन के लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद हुवे जो उन के अ़मल थे ।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि येह आयत रियाकारों के ह़क़ में नाज़िल हुई ।

(روح البیان، ۴/ ۱۰۸، ھود، تحت الآیۃ: ۱۵)

www.dawateislami.net

आ'माल रद हो जाएंगे

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है : मैं शरीक से बे नियाज़ हूं जिस ने किसी अ़मल में किसी को मेरे साथ शरीक किया मैं उसे और उस के शिर्क को छोड़ दूंगा और जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मोहर बन्द सहीफ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : इन्हें क़बूल कर लो और उन्हें छोड़ दो। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम इन में ख़ैर के इलावा कुछ नहीं पाते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तुम दुरुस्त कहते हो मगर येह मेरे ग़ैर के लिये हैं और आज मैं सिर्फ़ वोही **आ'माल** क़बूल करूंगा जो **मेरी रिज़ा** के लिये किये गए थे। (كنز العمال،٣/ ١٨٩،حديث:٧٤٧١،٧٤٧٢)

उस का अ़मल बरबाद हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ज़करिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : जिस ने अपने अ़मल में रियाकारी की उस का सारा अ़मल बरबाद हो गया।

(مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الزهد، كلام الحسن البصرى،٨/ ٢٦٦،رقم:١١١)

बरोज़े क़ियामत नदामत का सामना

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब लोग अपने आ'माल ले कर आएंगे तो **रियाकारों** से

www.dawateislami.net

कहा जाएगा : उन के पास जाओ जिन के लिये तुम रियाकारी किया करते थे और उन के पास अपना अज्र तलाश करो ।

(معجم کبیر، ٤/٢٠٣،حدیث:٤٣٠١)

रियाकारों का अन्जाम

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **क़ियामत** के दिन सब से पहले एक **शहीद** का फ़ैसला होगा जब उसे लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह उन ने'मतों का इक़रार करेगा फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या अ़मल किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने तेरी राह में **जिहाद** किया यहां तक कि **शहीद** हो गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू **झूटा** है तू ने जिहाद इस लिये किया था कि तुझे **बहादुर** कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया, फिर उस के बारे में **जहन्नम** में जाने का हुक्म देगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम** में डाल दिया जाएगा ।

फिर उस शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **इ़ल्म** सीखा, सिखाया और **क़ुरआने करीम** पढ़ा, वोह आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने इ़ल्म सीखा और सिखाया और तेरे लिये क़ुरआने करीम पढ़ा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू **झूटा** है तू ने इ़ल्म इस लिये सीखा ताकि तुझे **आ़लिम** कहा जाए और

www.dawateislami.net

कुरआने करीम इस लिये पढ़ा ताकि तुझे **क़ारी** कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया। फिर उसे भी **जहन्नम** में डालने का हुक्म होगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम** में डाल दिया जाएगा,

फिर एक **मालदार** शख़्स को लाया जाएगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कसरत से माल अ़ता फ़रमाया था, उसे ला कर ने'मतें याद दिलाई जाएंगी वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले क्या किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने तेरी राह में जहां ज़रूरत पड़ी वहां **ख़र्च** किया। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू झूटा है तू ने ऐसा इस लिये किया था ताकि तुझे **सख़ी** कहा जाए और वोह कह लिया गया। फिर उस के बारे में **जहन्नम** का हुक्म होगा, चुनान्चे, उसे भी मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम** में डाल दिया जाएगा। (اَلْاَمَان وَالْحَفِيظ)

(مسلم،کتاب الامارۃ،باب من قاتل للریاء......الخ،ص۱۰۵۵،حدیث:۱۹۰۵)

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : मा'लूम हुवा कि जैसे **इख़्लास** वाली नेकी **जन्नत** मिलने का ज़रीआ़ है ऐसे ही रिया वाली नेकी **जहन्नम** और ज़िल्लत ह़ासिल होने का सबब। यहां रियाकार **शहीद, आ़लिम** और **सख़ी** ही का ज़िक्र हुवा, इस लिये कि उन्हों ने **बेहतरीन अ़मल** किये थे जब येह अ़मल रिया से **बरबाद** हो गए तो दीगर आ'माल का क्या पूछना ! **रिया के ह़ज व ज़कात और नमाज़ का भी येही ह़ाल है।** (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 191)

www.dawateislami.net

हमारा क्या बनेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त तश्वीश का मक़ाम है कि अगर **इख़्लास** न होने की वज्ह से हमें भी **रियाकारों** की सफ़ में खड़ा कर दिया गया तो हमारा क्या बनेगा ? **रब** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी**, दूध व शहद की बहती हुई नहरों, जन्नत की हूरों, आ़लीशान महल्लात और जन्नत के दीगर इन्आ़मात से **महरूमी** और मैदाने महशर में सब के सामने रुस्वाई का सदमा हम कैसे सहेंगे ? हमारा नाज़ुक वुजूद जो **गर्मी** या **सर्दी** की ज़रा सी शिद्दत से परेशान हो जाता है जहन्नम के हौलनाक **अ़ज़ाबात** क्यूंकर बरदाश्त कर पाएगा ।

हाए ! मा'मूली सी गर्मी भी सही जाती नहीं

गर्मिये ह़श्र मैं फिर कैसे सहूंगा या रब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से पहले कि **मौत** हमें उ़म्दा बिछौने से उठा कर क़ब्र में फ़र्शे ख़ाक पर सुला दे, हमें चाहिये कि **रियाकारी** की तारीकी से नजात पाने के लिये अपने सीने को **नूरे इख़्लास** से मुनव्वर कर लें ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो

कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(हिकायत : 9)

मेरी हिजरत माल के लिये नहीं थी

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पैग़ाम भेजा कि अपने हथयार और अपने कपड़े पहन लो फिर मेरे पास आओ । मैं हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू कर रहे थे । फ़रमाया : ऐ अ़म्र ! मैं ने तुम्हें इस लिये पैग़ाम भेजा ताकि तुम्हें एक काम में भेजूं, तुम्हें ख़ुदा तआ़ला सलामत लौटाएगा और ग़नीमत देगा और हम तुम को कुछ माल भी अ़ता फ़रमाएंगे, तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी हिजरत माल के लिये न थी वोह तो सिर्फ़ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के लिये थी, फ़रमाया : नेक आदमी के लिये अच्छा माल बहुत ही अच्छा है ।

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الامارۃ والقضاء،باب رزق الولاۃ وھدایاھم، ۲/۱۷، حدیث:۳۷۵۶)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : या'नी सवाब, इ़ज़्ज़त के इ़लावा हम तुम को उजरत व मुआ़वज़ा भी अ़ता फ़रमाएंगे, येह ह़दीस हुक्काम की तनख़्वाह की अस्ल है मुक़र्रर इस लिये न फ़रमाई कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मालिक हैं, ग़ुलामों को जो चाहें अ़ता फ़रमा दें, येह मह़ज़ तनख़्वाह न थी बल्कि अ़तिय्यए शाहाना भी था और अब तनख़्वाह का मुक़र्रर करना ज़रूरी है कि इजारे में काम व माल दोनों मुक़र्रर होने चाहियें लिहाज़ा ह़दीस वाज़ेह़ है इस पर ए'तिराज़ नहीं ।

www.dawateislami.net

"मेरी हिजरत माल के लिये न थी" के तह़त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : या'नी मैं बिग़ैर मुआ़वज़ा येह ख़िदमत अन्जाम दूंगा क्यूंकि मेरा इस्लाम लाना, हिजरत करना, ओ़ह्दा ह़ासिल करने बड़ी तनख़्वाह लेने के लिये न था। سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह था इख़्लास। "नेक आदमी के लिये अच्छा माल बहुत ही अच्छा है" के तह़त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : या'नी उस माल के क़बूल से तुम्हारे सवाब में कमी न होगी येह तो रब तआ़ला की ने'मत है। ख़याल रहे कि मर्दे सालेह़ वोह है जो नेकी पहचाने और करे और माले सालेह़ वोह है जो अच्छे रास्ते आए और अच्छी राह जाए या'नी ह़लाल कमाई भलाई में ख़र्च हो, **अल्लाह** तआ़ला नसीब फ़रमाए।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 390)

रिया की वज्ह से नेकी न छोड़े

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रिया से अक्सर अ़मल का सवाब कम हो जाता है अ़मल बाति़ल नहीं होता इसी लिये रियाकार पर रिया से की हुई इ़बादत का लौटाना वाजिब नहीं और अगर बा'द में तौबा नसीब हो जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह कमी भी पूरी हो जाती है, फिर रिया की भी दो क़िस्में हैं : (1) रिया नफ़्से अ़मल (में), येही कि अगर लोग न देखते हों और राए नामवरी की उम्मीद न हो तो नेकी करे ही नहीं। (2) दूसरे रिया कमाले अ़मल में, अगर लोगों के दिखावे को अच्छी त़रह़ नेकी करे वरना मा'मूली त़रह़, **पहली** ज़ियादा ख़त़रनाक है **दूसरी** रिया हल्की। ख़याल रहे कि कोई शख़्स रिया की वज्ह से अ़मल न छोड़ दे, इख़्लास

www.dawateislami.net

की दुआ़ करे और अ़मल करता जाए कभी रब तआ़ला इख़्लास भी नसीब कर ही देगा, मख्खियों की वज्ह से खाना न छोड़े।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 449)

क्या दीनी ख़िदमत पर तनख़्वाह लेने से सवाब कम हो जाता है ?

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अगर निय्यत ख़ैर हो तो दीनी ख़िदमत पर तनख़्वाह लेने की वज्ह से उस का सवाब कम नहीं होता, देखो उन आ़मिलों को पूरी उजरत दी जाती थी मगर साथ में येह सवाब भी था। चुनान्चे, मुजाहिद को ग़नीमत भी मिलती है और सवाब भी, ह़ज़राते खुलफ़ाए राशिदीन सिवाए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के सब ने ख़िलाफ़त पर तनख़्वाहें लीं मगर सवाब किसी का कम नहीं हुवा, ऐसे ही वोह उ़लमा या इमाम व मुअज़्ज़िन जो तनख़्वाह ले कर ता'लीम, अज़ान, इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देते हैं अगर उन की निय्यत ख़िदमते दीन की है तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब भी ज़रूर पाएंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 18) एक और ह़दीस की शर्ह़ में मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे : एक येह कि नेक आ'माल की उजरत लेना जाइज़ है। चुनान्चे, उ़लमा, क़ाज़ी, मुदर्रिसीन ह़त्ता कि खुद खलीफ़ा की तनख़्वाह बैतुल माल से दी जाएगी, सिवाए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाक़ी तीनों खुलफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ने बैतुल माल से ख़िलाफ़त की तनख़्वाह वुसूल की है। दूसरे येह कि जब काम करने वाले की निय्यत ख़ैर हो तो तनख़्वाह लेने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब कम न होगा। सिर्फ़

www.dawateislami.net

तनख़्वाह के लिये दीनी काम न करे तनख़्वाह तो गुज़ारे के लिये वुसूल करे, अस्ल मक़्सद दीनी ख़िदमत हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 67)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) उ़ज्ब व ख़ुद पसन्दी

ख़ातिमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : إِنَّ الْعُجْبَ لَيُحْبِطُ عَمَلَ سَبْعِيْنَ سَنَةً या'नी ख़ुद पसन्दी सत्तर साल के अ़मल को बरबाद कर देती है।

(جامع صغير، ص١٢٧، حديث:٢٠٧٤)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : 70 से मुराद कसीर अ़र्सा है जैसा कि इस फ़रमाने बारी तआ़ला में :

فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا [1] (پ٢٩، الحاقة:٣٢) इस की वज्ह येह है कि ख़ुद पसन्दी का शिकार शख़्स मह़्ज़ अपने अ़मल को ज़ियादा और अच्छा समझता है और उस की त़रह़ हो जाता जिसे नज़र लग जाए और वोह हलाक हो जाए। इसी लिये दाना लोगों का क़ौल है कि ख़ुद पसन्दी अ़मल को नज़र लगने का नाम है। रिवायत में है कि नज़र मर्द को क़ब्र में दाख़िल कर देती है। जिस त़रह़ नज़र इन्सान को हलाक करती है उसी त़रह़ उस के आ'माल को भी मुर्दा और बात़िल कर देती है। बा'ज़ औक़ात इन्सान के दिल में ग़फ़्लत डेरा जमा लेती है चुनान्चे, वोह अपने नेक आ'माल को अपना कारनामा जानता है और उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एह़सान नहीं मानता कि उस ने उस में नेकी की क़ुव्वत पैदा फ़रमाई

1 : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है।

www.dawateislami.net

और तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई । मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़ुद पसन्दी की एक **ता'रीफ़** येह बयान की गई है : ने'मत को बड़ा समझना लेकिन उस की निस्बत ने'मत देने वाले की त़रफ़ न करना । ख़ुद पसन्दी से तकब्बुर पैदा होता है नीज़ उस की नुहूसत से बन्दा गुनाहों को भूल जाता है क्यूंकि ख़ुद पसन्दी और गुनाहों की आफ़ात से ग़ाफ़िल होने के सबब वोह अपने आप को बे नियाज़ समझने लगता है और यूं उस के आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं । ख़ुद पसन्दी बन्दे को दूसरों से मश्वरा और फ़ाएदा ह़ासिल करने और नसीह़त सुनने से रोक देती है और उसे दूसरों को ह़क़ीर समझने और दीनी व दुन्यवी मुआ़मलात में दुरुस्त बात को समझने से मह़रूमी में मुब्तला कर देती है । **(فیض القدیر،٢/٤٧٥،تحت الحدیث:٢٠٧٤)**

ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाह़त

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی लिखते हैं : जो शख़्स इल्म, अ़मल और माल के ज़रीए़ अपने नफ़्स में कमाल जानता हो उस की "दो हालतें" हैं : इन में से **एक** येह है कि उसे इस कमाल के ज़वाल का ख़ौफ़ हो या'नी इस बात का डर हो कि उस में कोई तब्दीली आ जाएगी या बिल्कुल ही सल्ब और ख़त्म हो जाएगा तो ऐसा आदमी "**ख़ुद पसन्द**" नहीं होता । **दूसरी** ह़ालत येह है कि वोह इस के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं रखता बल्कि वोह इस बात पर खुश और मुत़मइन होता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे येह ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है इस में मेरा अपना कमाल नहीं । येह भी "ख़ुद पसन्दी" नहीं है और इस के लिये एक **तीसरी** ह़ालत भी है जो **ख़ुद पसन्दी** है

www.dawateislami.net

और वोह येह है कि उसे इस कमाल के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि वोह इस पर मसरूर व मुत़मइन होता है और उस की मसर्रत का बाइ़स येह होता है कि येह कमाल, ने'मत व भलाई और सर बुलन्दी है, वोह इस लिये खुश नहीं होता कि येह **अल्लाह** तआ़ला की इनायत और ने'मत है बल्कि उस (या'नी खुद पसन्द बन्दे) की खुशी की वज्ह येह होती है कि वोह इसे अपना वस्फ़ (या'नी ख़ूबी) और खुद अपना ही कमाल समझता है वोह इसे **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा व इनायत तसव्वुर नहीं करता।

(اِحیاءُ عُلوم الدین،کتاب ذم الکبر والعجب،بیان حقیقۃ العجب...الخ،۳/۴۰۴)

बेहतर है कि सारी रात सोया रहूं

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं रात भर इबादत करूं और सुब्ह़ **खुद पसन्दी** में पड़ूं या'नी येह समझूं कि मैं तो बड़ा नेक आदमी हूं इस से बेहतर येही है कि रात सोया रहूं और सुब्ह़ रात की इबादत से मह़रूमी पर अफ़्सोस करूं।

(اِحیاءُ عُلوم الدین،کتاب ذم الکبر والعجب،بیان ذم العجب وآفاتہ،۳/۴۰۲)

नेक कामों की तौफ़ीक़ मिलना ने'मत है

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : नेक कामों की तौफ़ीक़ **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों में से एक ने'मत और उस के अ़त़िय्यात में से एक अ़त़िय्या (عَطِیَّہ या'नी बख़्शिश) है लेकिन **खुद पसन्दी** ही की वज्ह से नादान इन्सान अपनी ज़ात की ता'रीफ़ करता और पाकीज़गी ज़ाहिर करता है और जब वोह अपनी राए, अ़मल और अ़क़्ल

www.dawateislami.net

पर इतराता है तो फ़ाएदा हासिल करने, मश्वरा लेने और पूछने से बाज़ रहता और यूं अपने आप पर और अपनी राए पर ए'तिमाद करता है। (कि मैं भी तो समझ बूझ रखता हूं, क्या ज़रूरत है कि दूसरों से मश्वरा लूं !) (احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان آفة العجب، ۳/ ۴۵۳) आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : आ़बिद को अपनी इबादत पर, आ़लिम को अपने इल्म पर, ख़ूब सूरत को अपनी ख़ूब सूरती और हुस्नो जमाल पर और मालदार को अपनी मालदारी पर इतराने का कोई हक़ नहीं पहुंचता क्यूंकि सब कुछ अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से है। (ایضاً، ص۴۵۵) या'नी ज़िहानत, इलाज करने की सलाहिय्यत, ख़ुश इल्हानी व ख़ुश बयानी वग़ैरा की ने'मत वग़ैरा जिस को जो कुछ मिला उस में बन्दे का अपना कोई कमाल ही नहीं जो दिया जितना दिया सब अल्लाह तआ़ला ने ही दिया है।

ख़ुद पसन्दी का इलाज

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (मुत्तक़ी व परहेज़गार और सिद्क़ व इख़्लास के पैकर होने के बा वुजूद ख़ुदा के डर के सबब) तमन्ना किया करते थे कि काश ! वोह मिट्टी, तिन्के और परिन्दे होते। (ताकि बुरे ख़ातिमे और अ़ज़ाबे क़ब्रो आख़िरत से बे ख़ौफ़ होते) तो जब सह़ाबा की येह कैफ़िय्यत थी तो कोई साह़िबे बसीरत (समझदार शख़्स) किस त़रह़ अपने अ़मल पर इतरा सकता या नाज़ कर सकता है और किस त़रह़ अपने नफ़्स के मुआ़मले में बे ख़ौफ़ रह सकता है ! तो येह

www.dawateislami.net

(या'नी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ख़ौफ़ और उन की आ़जिज़ी ज़ेह्न में रखना) **ख़ुद पसन्दी का इलाज** है और उस से इस का माद्दा बिल्कुल जड़ से उखड़ जाता है और जब येह (या'नी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के डरने का अन्दाज़) दिल पर ग़ालिब आता है तो सल्बे ने'मत (या'नी ने'मत छिन जाने) का ख़ौफ़ उसे इतराने (और ख़ुद को "कुछ" समझने) से बचाता है बल्कि जब वोह काफ़िरों और फ़ासिक़ों को देखता है कि किसी ग़लती के बिग़ैर ही जब उन (या'नी काफ़िरों) को ईमान से मह़रूम रहना पड़ा और उन (या'नी फ़ासिक़ों) को इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से हाथ धोना पड़ा तो वोह (या'नी सहाबए किराम का ख़ौफ़ याद रखने वाला शख़्स) अपने ह़क़ में डरते हुवे येह बात समझ लेता है कि रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की ज़ात बे नियाज़ है वोह चाहे तो किसी को किसी जुर्म के बिग़ैर ही मह़रूम कर दे और जिसे चाहे किसी वसीले के बिग़ैर ही अ़त़ा कर दे। ख़ुदाए बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ अपनी दी हुई ने'मत भी वापस ले सकता है। कितने ही मोमिन (مَعَاذَاللہ) मुर्तद हो गए जब कि बे शुमार परहेज़गार व इत़ाअ़त गुज़ार फ़ासिक़ हो गए और उन का ख़ातिमा अच्छा न हुवा। इस त़रह़ की सोच से **ख़ुद पसन्दी** ख़त्म हो जाती है।(1) **(احیاء علوم الدین،کتاب ذم الکبر والعجب،بیان علاج العجب،۳/۴۵۸)**

हुब्बे जाहो ख़ुद पसन्दी की मिटा दे आ़दतें
या इलाही ! बाग़े जन्नत की अ़त़ा कर राह़तें

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : सफ़ह़ा 34 ता 37 का मवाद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**शैत़ान के बा'ज़ हथयार**" से लिया गया है, येह रिसाला पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखता है।

www.dawateislami.net

(9) बद अख़्लाक़ी

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلْخُلُقُ الْحَسَنُ يُذِيْبُ الْخَطَايَا كَمَا يُذِيْبُ الْمَاءُ الْجَلِيْدَ وَالْخُلُقُ السُّوْءُ يُفْسِدُ الْعَمَلَ كَمَا يُفْسِدُ الْخَلُّ الْعَسَلَ

या'नी हुस्ने अख़्लाक़ ख़ताओं को इस त़रह़ पिघलाता है जैसे पानी बर्फ़ को पिघलाता है जब कि बद अख़्लाक़ी अ़मल को इस त़रह़ बरबाद कर देती है जैसे सिर्का शहद को ख़राब कर देता है।

(معجم کبیر، ۱۰/۳۱۹، حدیث: ۱۰۷۷۷)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : इस की वज्ह येह है कि हुस्ने अख़्लाक़ की बदौलत इन्सान से भलाई के काम सादिर होते हैं, भलाई के काम नेकी हैं और नेकियां गुनाहों को मिटा देती हैं। इस फ़रमाने आ़लीशान में येह इशारा है कि बन्दा हुस्ने अख़्लाक़ की बदौलत ही तमाम भलाइयों और बुलन्द मक़ामात को पाने पर क़ादिर होता है। इस ह़दीसे पाक के बारे में कहा गया है कि येह जवामेउ़ल कलिम (या'नी जामेअ़ तरीन अह़ादीस) में से है।

(فیض القدیر، ۳/۶۷۵، تحت الحدیث: ۴۱۳۷)

एक और मक़ाम पर तह़रीर फ़रमाते हैं : नेक काम का आग़ाज़ करने वाला अगर उस के साथ बद अख़्लाक़ी को शामिल कर ले तो उस का अ़मल बरबाद और सवाब ज़ाएअ़ हो जाएगा जैसा कि सदक़ा करने वाला अगर इस के बा'द एह़सान जताए और तक्लीफ़ दे।

www.dawateislami.net

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ मेरे रब ! तू ने फ़िरऔ़न को चार सौ साल की मोहलत अ़ता फ़रमाई ह़ालांकि वोह कहता था : मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं, नीज़ तेरी निशानियों का इन्कार करता और तेरे रसूलों को झुटलाता था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह्‌य फ़रमाई कि **"वोह अच्छे अख़्लाक़ वाला था इस लिये मैं ने चाहा कि उसे (दुन्या में ही) उस का बदला दे दूं।"** ह़ज़रते सय्यिदुना वह्‌ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : बद अख़्लाक़ शख़्स की मिसाल मिट्टी के टूटे हुवे बरतन की त़रह़ है जो न तो जुड़ सकता है और न ही दोबारा मिट्टी बन सकता है। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान है : कोई अच्छे अख़्लाक़ वाला बदकार शख़्स मेरे साथ रहे येह मुझे इस से ज़ियादा पसन्द है कि बद अख़्लाक़ आ़बिद मेरे साथ रहे।

(فیض القدیر،٤/١٥٠،تحت الحدیث:٤٧٢٢)

(हि़कायत : 10)

बद अख़्लाक़ी बरदाश्त करने का त़रीक़ा

किसी अ़क़्लमन्द शख़्स के पास उस का एक दोस्त आया तो मेज़बान ने उस के सामने खाना रखा, उस की बीवी इन्तिहाई बद अख़्लाक़ थी, उस ने आ कर दस्तरख़्वान उठाया और अपने शौहर को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया, दोस्त येह मुआ़मला देख कर ग़ुस्से की ह़ालत में बाहर निकल गया, अ़क़्लमन्द शख़्स उस के पीछे गया और कहा : उस दिन को याद करो जब हम तुम्हारे घर में खाना खा रहे थे और एक मुर्ग़ी दस्तरख़्वान पर आ गिरी थी जिस ने सारा खाना ख़राब कर दिया था लेकिन हम में से किसी को भी ग़ुस्सा नहीं आया। दोस्त ने

www.dawateislami.net

कहा : हां ! ऐसा ही हुवा था। अ़क़्लमन्द ने कहा : इस औ़रत को भी उस मुर्ग़ी की त़रह़ समझो । चुनान्चे, दोस्त का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया, वापस लौटा और कहने लगा : किसी दाना ने सच कहा है कि बुर्दबारी (सब्रो तह़म्मुल) हर दर्द की दवा है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب۔۔۔الخ، بیان فضیلۃ الحلم، ۳/۲۲۱)

(ह़िकायत : 11)

बद अख़्लाक़ क़ाबिले रह़्म है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ सफ़र में एक बद अख़्लाक़ आदमी शरीक हो गया, आप उस की बद अख़्लाक़ी पर सब्र करते और उस की **ख़ात़िर मुदारात** करते, जब वोह जुदा हो गया तो आप रोने लगे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया : मैं उस पर तरस खा कर रो रहा हूं कि मैं तो उस से अलग हो गया लेकिन उस की बद अख़्लाक़ी उस से अलग न हुई ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ریاضۃ النفس۔۔۔الخ، بیان فضیلۃ حسن الخلق۔۔۔الخ، ۳/۶۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) नमाज़ न पढ़ना

ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अ़मल बरबाद कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से उठ जाएगा जब तक कि वोह तौबा के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ न करे ।

(الترغیب والترھیب، ۱/۲۶۱، کتاب الصلاۃ، الترھیب من ترک الصلاۃ۔۔۔الخ، حدیث: ۸۲۸)

www.dawateislami.net

नमाजे़ अ़स्र की ख़ास ताकीद

साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ تَرَكَ صَلَاةَ الْعَصْرِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ या'नी जो नमाजे़ अ़स्र छोड़ दे उस के अ़मल ज़ब्त़ हो गए।

(بخاری،کتاب مواقیت الصلاۃ،باب من ترک العصر،١ /٢٠٣، حدیث:٥٥٣)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी उस का सवाब ज़ाएअ़ हो जाएगा, यहां गुज़श्ता अ़मल का बाति़ल होना मुराद नहीं क्यूंकि येह सिर्फ़ उस के लिये है जो मुर्तद हो कर मर जाए चुनान्चे, अ़मल ज़ब्त़ होने को उस दिन के नुक़्सान पर मह़मूल किया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा दिमयरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने इस फ़रमान को उस शख़्स के बारे में क़रार दिया है जो नमाज़ तर्क करने को ह़लाल समझे या इस की आ़दत बना ले या फिर यहां सवाब का ज़ाएअ़ होना मुराद है।

(فیض القدیر، ٣/٢٦٩،تحت الحدیث:٨١٥٣)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ग़ालिबन अ़मल से मुराद वोह दुन्यवी काम हैं जिस की वज्ह से उस ने नमाजे़ अ़स्र छोड़ी। ज़ब्ती़ से मुराद उस काम की बरकत का ख़त्म होना है, या येह मत़लब है कि जो अ़स्र छोड़ने का आ़दी हो जाए उस के लिये अन्देशा है कि वोह काफ़िर हो कर मरे जिस से आ'माल ज़ब्त़ हो जाएं, इस का मत़लब येह नहीं कि अ़स्र छोड़ना कुफ़्रो इर्तिदाद है।

www.dawateislami.net

ख़याल रहे कि नमाज़े अ़स्र को क़ुरआने करीम ने बीच की नमाज़ फ़रमा कर इस की बहुत ताकीद फ़रमाई, नीज़ इस वक़्त रात व दिन के फ़िरिश्तों का इजतिमाअ़ होता है और येह वक़्त लोगों की सैरो तफ़रीह़ और तिजारतों के फ़रोग़ का वक़्त है, इस लिये अक्सर लोग अ़स्र में सुस्ती कर जाते हैं इन वुजूह (या'नी अस्बाब की वज्ह) से क़ुरआन शरीफ़ ने भी अ़स्र की बहुत ताकीद फ़रमाई और ह़दीस शरीफ़ ने भी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 381)

(ह़िकायत : 12)

ज़मीन से दीनार निकालने वाला नमाज़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुफ़ज़्ज़ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने एक रूमी दोस्त से जब इस्लाम लाने का सबब पूछा तो उस ने बयान किया : हमारे मुल्क पर मुसलमानों का लश्कर ह़म्ला आवर हुवा, जंग हुई, हमारे कुछ लोग क़त्ल हुवे और कुछ उन के। मैं ने अकेले दस मुसलमानों को क़ैदी बना लिया, रूम में मेरा बहुत बड़ा घर था लिहाज़ा मैं ने उन सब को अपने ख़ादिमीन के सिपुर्द कर दिया। उन्हों ने उन को बेड़ियों में जकड़ कर ख़च्चरों पर सामान लादने के काम पर लगा दिया। एक दिन मैं ने उन क़ैदियों पर मुक़र्रर एक ख़ादिम को देखा कि उस ने एक क़ैदी से कुछ लिया और उस को नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ दिया, मैं ने उस ख़ादिम को पकड़ कर मारा और पूछा : बताओ ! तुम इस क़ैदी से क्या लेते हो ? तो उस ने बताया : येह हर नमाज़ के वक़्त मुझे एक दीनार देता है। मैं ने पूछा : क्या इस के पास दीनार हैं ? तो उस ने बताया : नहीं, मगर जब येह नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो

www.dawateislami.net

अपना हाथ ज़मीन पर मारता है और उस से एक दीनार निकाल कर मुझे दे देता है। मुझे शौक़ हुवा कि मैं उस की ह़क़ीक़त जानूं, लिहाज़ा जब दूसरा दिन हुवा तो मैं ख़ादिम के कपड़े पहन कर उस की जगह खड़ा हो गया। जब ज़ोहर का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे इशारा किया कि मुझे नमाज़ पढ़ने दे तो मैं तुझे एक दीनार दूंगा। मैं ने कहा : मैं दो दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने कहा : ठीक है। मैं ने उसे खोल दिया, उस ने नमाज़ पढ़ी। जब फ़ारिग़ हुवा तो मैं ने देखा कि उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा और वहां से दो नए दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। जब अ़स्र का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे पहली मरतबा की त़रह़ इशारा किया। मैं ने उसे इशारा किया कि मैं पांच दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने मान लिया और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो ज़मीन से पांच नए दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। फिर जब मग़रिब का वक़्त हुवा तो ह़स्बे मा'मूल मुझे इशारा किया तो मैं ने कहा : मैं दस दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने मेरी बात मान ली और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो ज़मीन से दस दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। फिर जब इ़शा की नमाज़ का वक़्त हुवा तो ह़स्बे आ़दत उस ने मुझे इशारा किया, मैं ने कहा : मैं बीस दीनार से कम नहीं लूंगा। फिर भी उस ने मेरी बात तस्लीम कर ली और नमाज़ से फ़रागृत पा कर उस ने ज़मीन से बीस दीनार निकाले और मुझे थमा कर कहने लगा : जो मांगना है मांगो ! मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ बहुत ग़नी और करीम है, मैं उस से जो मांगूंगा वोह अ़त़ा करेगा। उस का येह मुआ़मला देख कर मुझे बड़ा धचका लगा और मुझे यक़ीन हो गया कि येह वलिय्युल्लाह है, मुझ पर उस का रो'ब त़ारी हो गया, फिर मैं ने उस को ज़न्जीरों से आज़ाद कर दिया और वोह रात रो रो कर गुज़ारी।

www.dawateislami.net

जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने उसे बुला कर उस की ता'ज़ीमो तकरीम की, उसे अपना पसन्दीदा नया लिबास पहनाया और इख़्तियार दिया कि वोह चाहे तो हमारे शहर में इ़ज़्ज़त वाले मकान या मह़ल में रहे और चाहे तो अपने शहर चला जाए। उस ने अपने शहर जाना पसन्द किया। मैं ने एक ख़च्चर मंगवाया और ज़ादे राह दे कर उसे ख़च्चर पर ख़ुद सुवार किया। उस ने मुझे दुआ़ दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने पसन्दीदा दीन पर तेरा ख़ातिमा फ़रमाए।" उस का येह जुम्ला मुकम्मल न हुवा था कि मेरे दिल में दीने इस्लाम की मह़ब्बत घर कर गई, फिर मैं ने अपने दस ग़ुलाम उस के हमराह भेजे। उन्हें हुक्म दिया कि उसे निहायत एह़तिराम के साथ ले जाओ। फिर उस को एक दवात और काग़ज़ दिया और एक निशानी मुक़र्रर कर ली कि जब वोह ब ह़िफ़ाज़त तमाम अपने मक़ाम पर पहुंच जाए तो वोह निशानी लिख कर मेरी त़रफ़ भेज दे। हमारे और उस के शहर के दरमियान पांच दिन का फ़ासिला था। जब छटा दिन आया तो मेरे ख़ुद्दाम मेरे पास आए, उन के पास रुक़्आ़ भी था जिस में उस का ख़त़ और वोह अ़लामत मौजूद थी। मैं ने अपने ग़ुलामों से जल्दी पहुंचने का सबब दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि जब हम उस के साथ यहां से निकले तो हम किसी थकावट और मशक़्क़त के बिग़ैर घड़ी भर में वहां पहुंच गए लेकिन वापसी पर वोही सफ़र पांच दिनों में त़ै हुवा। उन की येह बात सुनते ही मैं ने पढ़ा : اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَ اَنَّ دِيْنَ الْاِسْلَامِ حَقٌّ (या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद उस के रसूल हैं और दीने इस्लाम ह़क़ है) फिर मैं रूम से निकल कर मुसलमानों के शहर आ गया। (الروض الفائق، ص ٩٥)

www.dawateislami.net

क्यूं कर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) बे सब्री

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुसीबत के वक़्त रानों पर हाथ मारना मुसीबत के सवाब को ज़ाएअ़ कर देता है।

(فردوس الاخبار،٢/٤٢،حديث:٣٧١٧)

इमामे अजल आ़रिफ़ बिल्लाह अबू बक्र मुह़म्मद इब्राहीम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इसी मफ़्हूम की एक ह़दीसे पाक नक़्ल करते हैं चुनान्चे, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ ضَرَبَ يَدَهٗ عِنْدَ الْمُصِيْبَةِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ या'नी जिस ने मुसीबत के वक़्त हाथ मारा उस का अ़मल ज़ाएअ़ हुवा।

(بحر الفوائدالمشهور بمعانى الاخبار،ص١٦٣)

इस ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बा'द शैख़ अबू बक्र मुह़म्मद इब्राहीम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : अ़मल के ज़ाएअ़ होने से अ़मल का सवाब ज़ाएअ़ होना मुराद है और इसी त़रह़ मुसीबत में सब्र करने का सवाब ज़ाएअ़ होना मुराद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती। (پ٢٣،الزمر:١٠))

मुसीबत के वक़्त हाथ मारना बे बरदाश्त होना है, और जिस ने मुसीबत को बरदाश्त न किया वोह सवाब का मुस्तह़िक़ न होगा और बे सब्री

www.dawateislami.net

मुसीबत पर मिलने वाले सवाब को ख़त्म कर देती है, जिस के अ़मल का सवाब ज़ाएअ़ हो जाए तो उस का अ़मल भी ज़ाएअ़ हो जाता है।

(بحر الفوائدالمشهور بمعانی الاخبار،ص١٦٣)

मुसीबत पर सब्र का इन्आ़म

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने **मुसीबत** पर सब्र किया यहां तक कि उस (मुसीबत) को अच्छे सब्र के साथ लौटा दिया **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस के लिये तीन सौ दरजात लिखेगा, हर एक दरजे के माबैन (या'नी दरमियान) ज़मीनो आस्मान का फ़ासिला होगा। (جَامِع صَغِير،ص٣١٧،حديث:٥١٣٧)

सवाब की रग़बत रखो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब तू मुसीबत में गिरिफ़्तार हो तो मुसीबत के सवाब में ज़ियादा राग़िब हो अगर वोह तुझ पर बाक़ी रखी जाए।

(ترمذی،کتاب الزهد،باب ما جاء فی الزهادة فی الدنیا،٤/١٥٢،حديث: ٢٣٤٧)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : यहां रग़बत का ज़िक्र है दुआ़ का ज़िक्र नहीं, मुसीबत की दुआ़ करना ममनूअ़ है मगर उस के सवाब की रग़बत करना अच्छा है, जब मुसीबत आ पड़े तो (नज़र) उस की तक्लीफ़ पर न हो उस के सवाब पर नज़र हो।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 116)

www.dawateislami.net

(हिकायत : 13)

महमूद व अयाज़ और ककड़ी की क़ाश

मन्कूल है, मश्हूर आशिके रसूल, सुल्तान महमूद गज़नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के पास कोई शख़्स ककड़ी ले कर हाज़िर हुवा। सुल्तान ने ककड़ी क़बूल फ़रमा ली और पेश करने वाले को इन्आम दिया। फिर अपने हाथ से ककड़ी की एक क़ाश तराश कर अपने मन्ज़ूरे नज़र गुलाम अयाज़ को अ़ता फ़रमाई। अयाज़ मज़े ले ले कर खा गया। फिर सुल्तान ने दूसरी फांक काटी और खुद खाने लगे तो वोह इस क़दर कड़वी थी कि ज़बान पर रखना मुश्किल था। सुल्तान ने हैरत से अयाज़ की तरफ़ देखा और फ़रमाया : "अयाज़ ! इतनी कड़वी फांक तू कैसे खा गया ? वाह ! तेरे चेहरे पर तो ज़र्रा बराबर ना गवारी के असरात भी नुमूदार न हुवे ?" अयाज़ ने अ़र्ज़ किया : "आ़ली जाह ! ककड़ी वाक़ेई बहुत कड़वी थी। मुंह में डाली तो अ़क़्ल ने कहा : "थूक दे।" **मगर इश्क़ बोल उठा :** "अयाज़ ख़बरदार ! येह वोही हाथ हैं जिन से रोज़ाना मीठी अश्या खाता रहा है, अगर एक दिन कड़वी चीज़ मिल गई तो क्या हुवा ! इस को थूक देना आदाबे महब्बत के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इश्क़ की रहनुमाई पर मैं ककड़ी की कड़वी क़ाश खा गया।" (रहबरे ज़िन्दगी, स. 167)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अपने आक़ा की इस क़दर ने'मतें इस्ति'माल करने वाला अगर अयाज़ की तरह सोच बना ले तो बे सब्री कभी क़रीब से भी नहीं गुज़र सकती।

(हिकायत : 14)

बेटे की वफ़ात पर उ़म्दा कपड़े !

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना मुतर्रिफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रते सय्यिदुना मुतर्रिफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उ़म्दा कपड़े ज़ेबे तन किये, तेल लगाए लोगों के पास आए। वोह आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस ह़ालत में देख कर बहुत नाराज़ हुवे और बोले : आप के बेटे का इन्तिक़ाल हुवा है और आप तेल लगाए इन कपड़ों में घूम रहे हैं ? फ़रमाया : तो क्या मैं कम हिम्मती का इज़्हार करूं ? मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तीन इन्आ़मात देने का वा'दा फ़रमाया है और हर इन्आ़म मुझे दुन्या व माफ़ीहा से ज़ियादा मह़बूब है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

الَّذِيْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ؕ (۱۵۶) اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۫ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ (۱۵۷)

(پ ۲، البقرۃ: ۱۵۶۔۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। येह लोग हैं जिन पर उन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं।* (منہاج القاصدین، ص۱۰۷۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12 ता 17) अ़मल को बरबाद करने वाली छे चीज़ें

दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : छे चीज़ें अ़मल को ज़ाएअ़ कर देती हैं :

www.dawateislami.net

(1) मख़्लूक़ के ड़यूब की टोह में लगे रहना (2) क़सावते क़ल्बी (3) दुन्या की महब्बत (4) हया की कमी (5) लम्बी उम्मीद और (6) हद से ज़ियादा ज़ुल्म करना। (كنز العمال،جزء١٦،٨/٣٦ حديث:٤٤٠١٦)

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : लोगों के ऐबों की टोह में लगने से मुराद उन के ड़यूब को देखना और उन के बारे में गुफ़्तगू करना लेकिन अपने ऐबों की तरफ़ तवज्जोह न करना जब कि क़सावते क़ल्बी का मत़लब है : दिल का सख़्त होना और तरग़ीब व तरहीब को क़बूल न करना। मज़ीद फ़रमाते हैं कि दुन्या की महब्बत हर बुराई की जड़ है।

(فيض القدير،٤/ ١٢٥،تحت الحديث : ٤٦٥٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में छे चीज़ों का बयान है, इन के बारे में मज़ीद रिवायात मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे,

(1) ऐब न ढूंडो

पारह 26 सूरतुल हुजुरात की आयत 12 में ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों के अन्दर बुराइयों को तलाश करने से मन्अ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ٢٦،الحجرٰت:١٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐब न ढूंडो।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तहत लिखते हैं : या'नी मुसलमानों की ऐबजूई न करो और उन के छुपे हाल की तलाश में न रहो, जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी सत्तारी से छुपाया।

www.dawateislami.net

ऐबों के पीछे न पड़ो

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जब तुम लोगों के खुफ़्या उ़यूब के पीछे पड़ोगे तो उन्हें बिगाड़ दोगे ।

(شعب الایمان،باب فی الستر علی اصحاب القروف، ۷/۱۰۷، حدیث:۹۶۵۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ज़ाहिर येह है कि इस फ़रमाने आ़ली में ख़िता़ब ख़ुसूसी तौ़र पर जनाबे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से है, क्यूंकि आइन्दा येह सुल्ता़न बनने वाले थे, तो इस ग़ुयूब दां मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ही इन को त़रीक़ए सल्त़नत की ता'लीम फ़रमा दी कि तुम बादशाह बन कर लोगों के ख़ुफ़्या उ़यूब न ढूंडा करना, दर गुज़र और ह़त्तल इमकान अ़फ़्वो करम से काम लेना, और हो सकता है कि रूए सुख़न सब से हो कि बाप अपनी जवान औलाद को, ख़ावन्द अपनी बीवी को, आक़ा अपने मा तह़तों को हमेशा शक की निगाह से न देखे । बद गुमानियों ने घर बल्कि बस्तियां बल्कि मुल्क उजाड़ डाले । रब तआ़ला फ़रमाता है : "اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ"[1] और फ़रमाता है : "وَلَا تَجَسَّسُوْا"[2] हम अपने ऐ़ब ढूंडें और लोगों की ख़ूबियां तलाश करें । ख़याल रहे कि यहां बिला वज्ह की बद गुमानियों से मुमानअ़त है, वरना मश्कूक और बद मुआ़श लोगों की निगरानी करना

---

1 : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है । **(پ ۲۶،الحجرات:۱۲)**

2 : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो । **(پ ۲۶،الحجرات:۱۲)**

www.dawateislami.net

सुल्तान के लिये ज़रूरी है, जासूसी का मोहकमा मुल्क रानी के लिये लाज़िम है। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 364)

(ह़िकायत : 15) गुनाह झड़ते दिखाई देते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौजवान को वुज़ू करते हुवे देखा, उस से वुज़ू में इस्ति'माल शुदा पानी के क़त़रे टपक रहे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : बेटा ! मां बाप की नाफ़रमानी से तौबा कर लो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की। एक और शख़्स के वुज़ू के पानी को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस शख़्स से इरशाद फ़रमाया : मेरे भाई ! बदकारी से तौबा कर लो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की। एक और शख़्स के वुज़ू के पानी को देखा तो उस से फ़रमाया : शराब पीने और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले। उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ग़ैबी बातों के इज़्हार के बाइ़स चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे, लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में ग़ैबी बातों के इज़्हार के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।

(अल्मीज़ानुल कुब्रा, किताबुत्तहारत, जुज़ :1, 1/130 — فتاوا रज़विय्या, 2 / 65 ، اَلْمِيزَانُ الْكُبْرٰى،كِتَابُ الطَّهَارَة،جز:١،١/١٣٠)

www.dawateislami.net

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा तो बे मिसाल आप का है फ़त्वा
हैं इल्मो तक़्वा के आप संगम इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

पसन्दीदा बन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकते, जब तक लोगों की ऐसी बुराइयों की मज़म्मत करना तर्क न कर दो जो ख़ुद तुम में भी मौजूद हैं और उन की इस्लाह़ करते हुवे उन्हें ख़ुद से दूर न कर लो, जब तुम ऐसा करोगे तो फिर अपनी ही इस्लाह़ में मश्ग़ूल रहोगे और ऐसा ही बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा है। (الموسوعة لابن ابی الدنیا،باب الغیبة و ذمها،٤/٣٥٩، رقم:٦٠)

अपनी आंख में शहतीर दिखाई नहीं देता

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : يُبْصِرُ اَحَدُكُمُ الْقَذَاةَ فِي عَيْنِ اَخِيهِ وَيَنْسَى الْجِذْعَ فِي عَيْنِهِ या'नी तुम में से किसी को अपने भाई की आंख का तिन्का तो नज़र आ जाता है, लेकिन अपनी आंख में शहतीर नज़र नहीं आता।

(ابن حبان،کتاب الحظروالاباحة،باب الغیبة،٧/٥٠٦، حدیث: ٥٧٣١)

मुसलमानों के उ़यूब तलाश करने की सज़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ वोह लोगो ! जो ज़बानों से तो ईमान ले आए हो, मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! मुसलमानों की

www.dawateislami.net

ग़ीबत और उन के उ़यूब तलाश न किया करो, क्यूंकि जो मुसलमानों के उ़यूब तलाश करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमाता है उसे रुस्वा कर देता है, अगर्चे वोह अपने घर में हो।

(شعب الایمان،باب فی تحریم اعراض الناس ٥٠، ٢٩٦/٥، حدیث:٦٧٠٤)

न थी ह़ाल की जब हमें अपने ख़बर रहे देखते औरों के ऐ़बो हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र तो निगाहों में कोई बुरा न रहा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) क़सावते क़ल्बी

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के इ़लावा ज़ियादा गुफ़्तगू न किया करो क्यूंकि ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा ज़ियादा कलाम करना दिल की सख़्ती का बाइ़स है और बिलाशुबा सख़्त दिल इन्सान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब से ज़ियादा दूर है।

(ترمذی،کتاب الزھد ، باب:٦٢، ٤/١٨٤،حدیث:٢٤١٩)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : सख़्तिये दिल का अन्जाम येह होता है कि उस में वा'ज़ो नसीह़त असर नहीं करता, कभी इन्सान अपने गुज़श्ता गुनाहों पर रोता नहीं, आयाते इलाहिया में ग़ौर नहीं करता, अल्लाह तआ़ला मह़फ़ूज़ रखे, ज़ियादा कलाम और बहुत हंसना दिल को सख़्त करता है और ज़ियादा ज़िक्रुल्लाह या अल्लाह वालों की सोह़बत, मौत की याद, आख़िरत का ध्यान, क़ब्रिस्तान की ज़ियारत दिल में नर्मी पैदा करती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 319)

www.dawateislami.net

दिल की सख़्ती का एक इलाज

एक शख़्स ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो इरशाद फ़रमाया : यतीम के सर पर हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ ।

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الایتام والارامل، ۸/۲۹۳،حدیث:۱۳۵۰۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) दुन्या की महब्बत

पारह 7 सूरतुल अन्आ़म आयत नम्बर 32 में फ़रमाने रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ है :

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेल कूद और बेशक पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं तो क्या तुम्हें समझ नहीं ।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़त लिखते हैं : नेकियां और त़ाअ़तें (या'नी इ़बादतें) अगर्चे मोमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं । इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन (या'नी नेक बन्दों के आ'माल) के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो ला'ब (या'नी खेल कूद) है ।

www.dawateislami.net

दुन्या की महृब्बत तमाम बुराइयों की जड़ है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या की महृब्बत तमाम बुराइयों की जड़ है ।

(شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/ ۳۳۸، حدیث:۱۰۵۰۱)

आख़िरत को नुक़्सान पहुंचता है

हृदीस में है : जो शख़्स अपनी दुन्या से महृब्बत करता है तो वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो आख़िरत से महृब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है तो (ऐ मुसलमानो !) बाक़ी रहने वाली चीज़ (या'नी आख़िरत) को फ़ना होने वाली चीज़ (या'नी दुन्या पर तरजीह़) दो ।

(مسند احمد،۷/۱۶۵،حدیث: ۱۹۷۱۷)

दुन्या की हैसिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की क्या हैसिय्यत है : रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या आख़िरत के मुक़ाबिल ऐसी है जैसे तुम में से कोई अपनी उंगली समन्दर में डाले फिर देखे कि उंगली कितना पानी ले कर लौटती है । (مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الرقاق،۳/۱۰۵،حدیث: ۵۱۵۶)

(हि़कायत : 16)

फ़ना हो जाने वाली को तरजीह़ न दो

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم

www.dawateislami.net

के साथ सह़रा में शरीके सफ़र था कि अचानक हमें एक क़ब्र नज़र आई। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم उस क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और क़ब्र वाले के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत की, फिर रोने लगे। मैं ने अ़र्ज़ की : येह क़ब्र किस की है ? जवाब दिया : येह क़ब्र ह़मीद बिन इब्राहीम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की है जो यहां के तमाम शहरों के गवर्नर थे और दुन्या की मह़ब्बत में ग़र्क़ थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें बचा लिया। इतना कहने के बा'द फ़रमाया : येह एक दिन अपनी ममलुकत की वुस्अ़त और दुन्यावी मालो दौलत की कसरत से बहुत ख़ुश थे, इसी दौरान जब येह सोए तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स जिस के हाथ में एक किताब थी, इन के सिरहाने आन खड़ा हुवा। ह़मीद ने उस शख़्स से किताब ले कर उसे खोला तो उस में जली हुरूफ़ से लिखा था : फ़ना हो जाने वाली को बाक़ी रह जाने वाली पर तरजीह़ न दे और अपनी ममलुकत, हुकूमत, बादशाहत, ख़ुद्दाम, ग़ुलाम और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में खो कर ग़ाफ़िल मत हो जा, बेशक जिस में तू मगन है उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं, ब ज़ाहिर जो तेरी मिल्किय्यत है वोह ह़क़ीक़तन हलाकत है, जो फ़र्ह़ व सुरूर है वोह ह़क़ीक़त में लह्वो ग़ुरूर है, जो आज है उस का कल कुछ पता नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जल्दी ह़ाज़िर हो जाओ क्यूंकि उस का फ़रमान है :

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَۙ (۱۳۳)

(پ٤، ال عمران: ۱۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं, परहेज़गारों के लिये तय्यार कर रखी है।*

www.dawateislami.net

जब येह नींद से बेदार हुवे तो बे इख़्तियार इन के मुंह से निकला : येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से तम्बीह और नसीहत है। फिर किसी को कुछ बताए बिग़ैर येह अपने मुल्क से निकल आए और इन पहाड़ों में आ बसे। जब मुझे इन का वाक़िआ मा'लूम हुवा तो मैं ने इन्हें तलाश किया और इन से इस बारे में दरयाफ़्त किया तो इन्हों ने येह वाक़िआ मुझे सुनाया, फिर मैं ने भी इन्हें अपना वाक़िआ सुनाया। मैं बराबर इन से मुलाक़ात के लिये आता रहा, यहां तक कि इन का इन्तिक़ाल हो गया और यहीं इन को दफ़्न कर दिया गया।

(كتاب التوابين،ص١٥٣)

कौन सी दुन्या अच्छी ? कौन सी क़ाबिले मज़म्मत ?

दुन्यावी अश्या की तीन क़िस्में हैं : ﴾1﴿ वोह दुन्यावी अश्या जो आख़िरत में साथ देती हैं और उन का नफ़्अ़ मौत के बा'द भी मिलता है, ऐसी चीज़ें सिर्फ़ दो हैं : **इल्म** और **अ़मल**, अ़मल से मुराद है : इख़्लास के साथ **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करना और दुन्या की येह क़िस्म महमूद (या'नी बहुत उ़म्दा) है ﴾2﴿ वोह चीज़ें जिन का फ़ाएदा सिर्फ़ दुन्या तक ही महदूद रहता है आख़िरत में इन का कोई फल नहीं मिलता जैसे जाइज़ चीज़ों से ज़रूरत से ज़ियादा फ़ाएदा उठाना मसलन ज़मीन, जाइदाद, सोना चांदी, उ़म्दा कपड़े और अच्छे अच्छे खाने खाना और येह दुन्या की मज़मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) क़िस्म में शामिल हैं ﴾3﴿ वोह अश्या जो नेकियों पर मददगार हों जैसे ज़रूरी ग़िज़ा, कपड़े वग़ैरा। येह क़िस्म भी महमूद (अच्छी) है लेकिन अगर महज़ दुन्या का फ़ौरी फ़ाएदा और लज़्ज़त मक़्सूद हो तो अब येह दुन्या मज़मूम (क़ाबिले मज़म्मत) कहलाएगी।

(احياء علوم الدين،كتاب ذم الدنيا،بيان حقيقة الدنيا...الخ،٣/٢٧٠ ملخصاً)

www.dawateislami.net

दुन्या के नज़ारों से भला क्या हो सरोकार
उश्शाक़ को बस इश्क़ है गुलज़ारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 405)

(हिकायत : 17)

माले दुन्या ने रुला दिला

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत के लिये गए तो उन्हें रोते देख कर पूछा : क्यूं रो रहे हैं ? आप तो हौज़े कौसर पर अपने दोस्तों (या'नी सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) और हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलने वाले हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले जाते वक़्त आप से राज़ी थे । फ़रमाया : मैं मौत के डर या दुन्या छूटने की वज्ह से नहीं रो रहा बल्कि मैं तो इस वज्ह से रो रहा हूं कि मेरे इर्द गिर्द कसीर साज़ो सामान पड़ा हुवा है हालांकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से अ़हद लिया था कि "तुम्हारे पास दुन्यावी सामान सिर्फ़ इतना होना चाहिये जितना एक मुसाफ़िर के पास ज़ादे राह होता है ।" रावी बयान करते हैं : उस वक़्त उन के पास जो सामान था वोह सिर्फ़ एक बरतन था जो वुज़ू करने या कपड़े धोने के काम आता था । (حلية الاولياء، ١/٢٠٣)

पीछा मेरा दुन्या की महब्बत से छुड़ा दे
या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 112)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4) ह़या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ईमान के सत्तर से ज़ाइद शो'बे (या'नी ख़स्लतें) हैं और ह़या ईमान का एक शो'बा है।

(مُسلِم،کتاب الایمان،باب بیان عدد...الخ، ص۳۹،حدیث:۳۵)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : सिर्फ़ ज़ाहिरी नेकियां कर लेना और ज़बान से ह़या का इक़रार करना पूरी ह़या नहीं बल्कि ज़ाहिरी और बात़िनी आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना ह़या है। चुनान्चे, सर को ग़ैरे ख़ुदा के सजदे से बचाए, अन्दरूने दिमाग़ को रिया और तकब्बुर से बचाए, ज़बान, आंख और कान को नाजाइज़ बोलने, देखने, सुनने से बचाए, येह सर की ह़िफ़ाज़त हुई, पेट को ह़राम खानों से, शर्मगाह को ज़िना से, दिल को बुरी ख़्वाहिशों से मह़फ़ूज़ रखे येह पेट की ह़िफ़ाज़त है। ह़क़ येह है कि येह ने'मतें रब की अ़त़ा और जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ा से नसीब हो सकती हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 440)

शरई ह़या किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : शरई ह़या येह है कि बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों और अपनी कोताहियों पर ग़ौर कर के नादिम व शर्मिन्दा हो और इस शर्मिन्दगी और **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ की बिना पर आइन्दा गुनाहों से बचने और नेकियां करने की कोशिश करे। (مِرقَاۃُ الْمَفَاتِیح،۸/ ۸۰۰،تحت الحدیث ۵۰۷۰)

www.dawateislami.net

कसरते ह़या से मन्अ़ मत करो

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी को मुलाह़ज़ा फ़रमाया : जो अपने भाई को शर्मो ह़या के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त कर रहे थे (या'नी कसरते ह़या से मन्अ़ कर रहे थे) तो फ़रमाया : इसे छोड़ दो, बेशक ह़या ईमान से है।

(أبو داوٗد،کتاب الادب،باب فی الحیاء، ٤/٣٣١، حدیث: ٤٧٩٥)

ह़या ज़ीनत देती है और बे ह़याई ऐबनाक करती है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : बे ह़याई जिस चीज़ में भी हो उसे ऐबनाक कर देती है और शर्मो ह़या जिस चीज़ में भी हो उसे ज़ीनत देती है।

(ترمذی، کتاب البروالصلة،باب ما جاء فی الفحش والتفحش، ٣/٣٩٢، حدیث:١٩٨١)

या'नी अगर बे ह़याई और ह़या व शर्म इन्सान के इलावा और मख़्लूक़ में भी हों तो उसे भी बे ह़याई ख़राब कर दे और ह़या अच्छा कर दे तो इन्सान का क्या पूछना ! ह़या ईमान की ज़ीनत, इन्सानिय्यत का ज़ेवर है, बे ह़याई इन्सानिय्यत के दामन पर बदनुमा धब्बा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 473)

जो चाहो करो

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, पैकरे शर्मो ह़या صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : اِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ या'नी जब तुझे ह़या नहीं तो तू जो चाहे कर। (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء،باب:٥٦، ٢/٤٧٠،حدیث:٣٤٨٤)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : जब तेरे दिल में अल्लाह–रसूल की, अपने बुज़ुर्गों की शर्मो हया न होगी तो तू बुरे से बुरा काम कर गुज़रेगा क्यूंकि बुराइयों से रोकने वाली चीज़ तो ग़ैरत है जब वोह न रही तो बुराई से कौन रोके ! बहुत लोग अपनी बदनामी के ख़ौफ़ से बुराइयां नहीं करते मगर जिन्हें नेकनामी बदनामी की परवाह न हो वोह हर गुनाह कर गुज़रते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 638)

हया कैसी हो ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस तरह हया करो जैसे अपनी क़ौम के किसी नेक आदमी से हया करते हो। (معجم کبیر،٦/٦٩،حدیث:٥٥٣٩)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : येह मुख़्तसर तरीन अल्फ़ाज़ में एक निहायत उम्दा और जामेअ़ नसीहत है क्यूंकि कोई भी फ़ासिक़ शख़्स ऐसा नहीं जो साहिबे फ़ज़ीलत और नेक लोगों के सामने बुरा काम करने से शर्म न महसूस करे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ के तमाम कामों पर मुत्तलअ़ है, बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस तरह हया करेगा जैसे अपनी क़ौम के किसी नेक शख़्स से करता है तो तमाम ज़ाहिरी और बातिनी गुनाहों से बच जाएगा।

(فیض القدیر،٣/٩٦،تحت الحدیث:٢٧٨٩)

www.dawateislami.net

(हिकायत : 18)

शब बेदारी शुरूअ़ फ़रमा दी

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आधी रात इबादत किया करते थे। एक दिन कहीं से गुज़रते हुवे आप ने एक शख़्स को अपने बारे में कहते सुना : येह साहिब पूरी रात इबादत करते हैं। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : लोग मेरे बारे में ऐसी बात कर रहे हैं जो मुझ में नहीं, इस के बा'द आप ने पूरी रात इबादत करना शुरूअ़ कर दिया और इरशाद फ़रमाया : اَنَا اَسْتَحِي مِنَ اللهِ اَنْ اُوْصَفَ بِمَا لَيْسَ فِيَّ مِنْ عِبَادَتِهٖ या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करता हूं कि मेरी त़रफ़ ऐसी इबादत मन्सूब की जाए जो मैं नहीं करता। (فيض القدير،٣/١٠٠،تحت الحديث:٢٧٩٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) लम्बी उम्मीद

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों के मुआ़मले में जवान रहता है दुन्या की महब्बत और लम्बी उम्मीद।

(بخاری،کتاب الرقاق،باب من بلغ ستين سنة...الخ،٤/٢٢٤حديث:٦٤٢٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : मह़ब्बते दुन्या ज़रीआ़ है मौत से डरने का और लम्बी उम्मीद ज़रीआ़ है आ'माले सालेह़ा में देर लगाने का। ख़याल रहे कि **अल्लाह** तआ़ला से उम्मीद और आख़िरत की लम्बी उम्मीद में कमाले ईमान की निशानी है। अमल दुन्या की उम्मीद

www.dawateislami.net

को कहते हैं और रजा आख़िरत की उम्मीद, अल्लाह से उम्मीद को कहा जाता है। अमल बुरी है रजा अच्छी। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 88)

लम्बी उम्मीदों के अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : येह बात इ़ल्म में रहे कि लम्बी उम्मीद का सबब दो चीज़ें हैं : (1) दुन्या की मह़ब्बत (2) जहालत। जहां तक दुन्या की मह़ब्बत का तअ़ल्लुक़ है तो इन्सान जब दुन्या और उस की फ़ानी लज़्ज़ात का रस्या हो जाता है तो फिर उस से दिल हटाना मुश्किल हो जाता है, इसी लिये दिल में मौत की फ़िक्र पैदा नहीं होती जो अस्ल दिल हटाने का सबब बनती है और हर शख़्स नापसन्दीदा चीज़ को ख़ुद से दूर करता है। इन्सान झूटी उम्मीदों में पड़ा हुवा है, ख़ुद को हमेशा अपनी मुराद के मुत़ाबिक़ दुन्या, मालो दौलत, अह्लो इ़याल, घरबार, यार दोस्त और दीगर चीज़ों की उम्मीदें दिलाता रहता है, तो उस का दिल इसी सोच में अटका रहता है और मौत के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है। अगर कभी मौत का ख़याल आ भी जाए तो तौबा को आइन्दा पर डालते हुवे अपने नफ़्स को येह दिलासा देता है : अभी बहुत दिन पड़े हैं, थोड़ा बड़ा तो हो जा फिर तौबा कर लेना, और जब बड़ा हो जाए तो कहता है : अभी थोड़ा बूढ़ा तो हो जा फिर तौबा कर लेना, और जब बूढ़ा हो जाए तो कहता है : पहले येह घर बना लूं या इस जाइदाद की ता'मीर वग़ैरा कर लूं या इस सफ़र से वापस आ जाऊं फिर कर लूंगा। यूं वोह हमेशा ताख़ीर पर ताख़ीर करता चला जाता है, और एक काम की ह़िर्स मुकम्मल हो नहीं पाती कि दूसरे की ह़िर्स आन पड़ती है, इसी त़रह़ दिन गुज़रते

www.dawateislami.net

चले जाते हैं, एक के बा'द एक काम पड़ता ही रहता है यहां तक कि एक वक़्त जिस में उस का गुमान भी नहीं होता उसे मौत भी आ जाती है और उस की ह़सरतों के साए हमेशा के लिये दराज़ हो जाते हैं। अक्सर जहन्नमी इसी "आइन्दा" की वज्ह से दोज़ख़ में होंगे और कहेंगे : हाए ह़सरत ! इन उम्मीदों के पैदा होने की अस्ल वज्ह दुन्या की मह़ब्बत व उनसिय्यत और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से ग़फ़्लत है : जिस से चाहो मह़ब्बत कर लो ! तुम्हें उस से जुदा होना ही है।

(شعب الایمان،باب فی الزھد وقصر الامل، ۷ / ۳٤۸ ، حدیث : ۱۰۵٤۰)

लम्बी उम्मीद का दूसरा सबब जहालत है। वोह यूं कि इन्सान अपनी जवानी पर भरोसा कर के मौत को दूर ख़याल करता है। क्या वोह येह ग़ौर नहीं करता कि अगर उस की बस्ती के बूढ़े अफ़राद शुमार किये जाएं तो वोह कितने थोड़े होंगे ? उन के थोड़े होने की वज्ह येही है कि जवानों को मौत ज़ियादा आती है, और जब तक कोई बूढ़ा मरता है तब तक तो कई बच्चे और जवान मर चुके होते हैं। कभी येह शख़्स अपनी सिह़्ह़त से धोका खा बैठता है और येह नहीं समझ पाता कि मौत अचानक आती है, अगर्चे वोह उसे बईद समझे, क्यूंकि मरज़ तो अचानक ही आता है, तो जब कोई बीमार हो जाए तो मौत दूर नहीं रहती। अगर वोह येह बात समझ ले और इस की फ़िक्र पैदा कर ले कि मौत का कोई वक़्त गर्मी, सर्दी, ख़ज़ां, बहार, दिन या रात मख़्सूस नहीं और न ही कोई साल जवानी, बुढ़ापा या उधेड़पन वग़ैरा मुक़र्रर है तब उसे मुआ़मले की नज़ाकत का एह़सास हो वोह मौत की तय्यारी करना शुरूअ़ कर दे। (منهاج القاصدين،ص١٤٣٦)

www.dawateislami.net

"मदीने" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 हिकायात

(हिकायत : 19)

(i) तुम्हें दूसरी नमाज़ पढ़ने को मिलेगी ?

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबू तौबह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने नमाज़ के लिये इक़ामत कही और मुझ से नमाज़ पढ़ाने को कहा। मैं ने कहा : येह नमाज़ तो मैं पढ़ा देता हूं इस के इलावा कोई नहीं पढ़ाऊंगा। येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : तुम ने येह ख़याल दिल में बसा रखा है कि तुम्हें दूसरी नमाज़ भी पढ़ने को मिलेगी ? हम लम्बी उम्मीद से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं, क्यूंकि येह अ़मले ख़ैर में रुकावट बनती है। (منہاج القاصدین،ص۱٤٤١) .

(हिकायत : 20)

(ii) जिस्म बूढ़ा मगर उम्मीद जवान

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान अ़ब्दुर्रहमान नहदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरी उ़म्र 130 साल हो चुकी है। मैं ने इस उ़म्र तक पहुंचने में हर चीज़ में कमी होती देखी सिवाए मेरी उम्मीदों के, कि वोह अभी तक वैसी ही हैं। (منہاج القاصدین،ص۱٤٣٩)

(हिकायत : 21)

(iii) रोज़ाना मौत की तय्यारी

हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद हबीब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा फ़रमाती हैं : वोह मुझ से कहा करते थे कि अगर आज मैं मर जाऊं तो

www.dawateislami.net

फ़ुलां को ग़ुस्ल के लिये बुलाना ! फ़ुलां को येह करने का कहना ! तुम येह येह करना वग़ैरा। किसी ने पूछा : क्या वोह कोई ख़्वाब देखते थे ? फ़रमाया : वोह रोज़ ही ऐसा कहते थे। (منہاجِ القاصدین،ص۱٤۳۹)

(हिकायत : 22)

(iv) तुम रात तक ज़िन्दा रहोगे ?

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللہِ الْقَوِی अपने उस्ताद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम रुम्मानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास इस ह़ालत में आए कि आप की चादर के किनारे में कुछ बन्धा हुवा था, उस्ताद साहि़ब ने पूछा : तुम्हारे पास येह क्या है ? कहा : कुछ बादाम हैं जो मेरे भाई ने मुझे दिये हैं और कहा है कि मैं चाहता हूं तुम इन से रोज़ा इफ़्त़ार करो। उस्ताद साहि़ब ने कहा : ऐ शक़ीक़ ! तुम्हारा दिल येह कह रहा है कि तुम रात तक ज़िन्दा रहोगे, अब मैं तुम से कभी बात नहीं करूंगा। आप फ़रमाते हैं कि उस्ताद साहि़ब ने येह कह कर दरवाज़ा बन्द कर लिया और अन्दर चले गए।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذکر الموت،فضیلۃ قصر الامل،٥/١٩٩)

(हिकायत : 23)

(v) उम्मीद काम भी करवाती है

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक जगह तशरीफ़ फ़रमा थे और एक बूढ़ा आदमी बेलचे से ज़मीन खोद रहा था। आप ने दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की उम्मीद ख़त्म कर दे ! उस बूढ़े ने बेलचा रखा और लेट गया। कुछ देर गुज़री तो आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फिर दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस

www.dawateislami.net

की उम्मीद लौटा दे ! वोह बूढ़ा खड़ा हुवा और काम में मसरूफ़ हो गया। आप ने वज्ह पूछी तो कहने लगा : मैं काम कर रहा था कि दिल में ख़याल आया कि तू बूढ़ा हो चुका है कब तक काम करेगा ? मैं ने बेलचा एक जानिब रखा और लेट गया, फिर ख़याल आया कि जब तक ज़िन्दगी है कुछ न कुछ ज़रीआ़ तो इख़्तियार करना पड़ेगा, येह सोच कर मैं ने खड़े हो कर बेलचा संभाल लिया।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذکر الموت،فضیلة قصر الامل،۵/۱۹۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) ज़ुल्म

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ज़ुल्म से बचो क्यूंकि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अन्धेरियां होगा।

(مسلم،کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم ،ص ۱۳۹۴،حدیث:۲۵۷۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ज़ुल्म के लुग़वी मा'ना हैं किसी चीज़ को बे मौक़अ़ इस्ति'माल करना और किसी का ह़क़ मारना। इस की बहुत क़िस्में हैं : गुनाह करना अपनी जान पर ज़ुल्म है, क़राबत दारों या क़र्ज़ ख़्वाहों का ह़क़ न देना उन पर ज़ुल्म, किसी को सताना ईज़ा देना उस पर ज़ुल्म, येह ह़दीस सब को शामिल है और ह़दीस अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है या'नी ज़ालिम पुल सिरात़ पर अन्धेरियों में घिरा होगा, येह ज़ुल्म अन्धेरी बन कर उस के सामने होगा जैसे कि मोमिन का ईमान और उस के नेक आ'माल रौशनी बन कर उस के आगे

www.dawateislami.net

चलेंगे, रब तआला फ़रमाता है : نُوۡرُهُمۡ یَسۡعٰی بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ [1] चूंकि ज़ालिम दुन्या में ह़क़ नाह़क़ में फ़र्क़ न कर सका इस लिये अन्धेरे में रहा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 72)

(ह़िकायत : 24)

एक की क़बूल हो और हज़ारों की न हो !

ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन ज़ियाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुनीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَدِیْع को कहते सुना कि एक ताजिर टेक्स वुसूल करने वालों के पास से गुज़रा तो उन्हों ने उस की कश्ती रोक ली। ताजिर ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो आप उस के हमराह टेक्स वुसूल करने वालों की त़रफ़ चल दिये। जब उन्हों ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आते देखा तो अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ अबू यह़्या ! (आप ने क्यूं तक्लीफ़ की) कोई काम था तो पैग़ाम भेज दिया होता। फ़रमाया : इस की कश्ती छोड़ दो। उन्हों ने कहा : छोड़ दी। रावी का बयान है कि टेक्स वुसूल करने वालों के पास एक प्याला था जिस में वोह लोगों से छीना हुवा माल रखते थे। टेक्स वुसूल करने वालों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ऐ अबू यह़्या ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हमारे लिये दुआ़ कीजिये। फ़रमाया : इस प्याले से कहो कि तुम्हारे लिये दुआ़ करे ! मैं तुम्हारे लिये कैसे दुआ़ करूं जब कि हज़ारों आदमी तुम्हारे लिये बद दुआ़ करते हैं,

1 : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन का नूर दौड़ता होगा उन के आगे। (پ۲۸ التحریم:۸)

www.dawateislami.net

तुम्हारा क्या ख़याल है कि एक आदमी की दुआ़ क़बूल हो जाएगी और हज़ारों की बद दुआ़ क़बूल न होगी ! (حلية الاولياء،٢/٤٢٣،رقم:٢٨٢٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(18) कीना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : कीना और ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाते हैं जैसे आग लकड़ी को खा जाती है।

(كنزالعمال،٢/١٨٦، جزء:٣، حديث:٧٤٤١)

कीना किसे कहते हैं ?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने "इह़याउल उ़लूम" में कीने की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में की है : اَلْحِقْدُ اَنْ يَّلْزَمَ قَلْبُهُ اِسْتِثْقَالَهُ وَالْبُغْضَةَ لَهُ وَالنِّفَارَ عَنْهُ وَاَنْ يَّدُوْمَ ذٰلِكَ وَيَبْقٰى या'नी : कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे। (احياء علوم الدين، كتاب ذم الغضب...الخ،القول فى معنى الحقد...الخ، ٣/٢٢٣)

मसलन कोई शख़्स ऐसा है जिस का ख़याल आते ही आप को अपने दिल में बोझ सा मह़सूस होता है, नफ़रत की एक लहर दिलो दिमाग़ में दौड़ जाती है, वोह नज़र आ जाए तो मिलने से कतराते हैं तो समझ लीजिये कि आप उस शख़्स से **कीना** रखते हैं और अगर इन में से कोई बात भी नहीं बल्कि वैसे ही किसी से मिलने को जी नहीं चाहता तो येह कीना नहीं कहलाएगा। फ़तावा रज़विय्या जिल्द 6 सफ़्ह़ा 526 पर है : मुसलमान से बिला वज्हे शरई कीना व बुग़्ज़ रखना ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या, 6 / 526)

www.dawateislami.net

दीगर गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है

ग़ुस्से से कीना पैदा होता है और कीने से आठ हलाकत ख़ेज़ चीज़ें जनम लेती हैं : इन में से **एक** येह है कि "कीना परवर" ह़सद करेगा या'नी किसी के ग़म से शाद (या'नी ख़ुश) होगा और उस की ख़ुशी से ग़मगीन। **दूसरा** येह कि शुमातत करेगा या'नी किसी को कोई मुसीबत पहुंचेगी तो ख़ुशी का इज़्हार करेगा। **तीसरा** येह कि ग़ीबत, दरोग़ गोई (या'नी झूट) और फ़ोह़्श कलामी से उस के राज़ों को आश्कारा करेगा। **चौथा** येह कि बात करना छोड़ देगा और सलाम का जवाब नहीं देगा। **पांचवां** येह कि उसे ह़क़ारत की नज़र से देखेगा और उस पर ज़बान दराज़ी करेगा। **छटा** येह कि उस का मज़ाक़ उड़ाएगा। **सातवां** येह कि उस की ह़क़ तलफ़ी करेगा और सिलए रेह़्मी नहीं करेगा या'नी अक़रिबा से मुरव्वत नहीं करेगा और रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ अदा नहीं करेगा और उन के साथ इन्साफ़ नहीं करेगा और त़ालिबे मुआ़फ़ी नहीं होगा। **आठवां** येह कि जब उस पर क़ाबू पाएगा उस को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाएगा और दूसरों को भी उस की ईज़ा रसानी पर उभारेगा। अगर कोई बहुत दीनदार है और गुनाहों से भागता है तो इतना तो ज़रूर करेगा कि उस के साथ जो एह़सान करता था उस को रोक देगा और उस के साथ शफ़्क़त से पेश नहीं आएगा और न उस के कामों में दिलसोज़ी करेगा और न उस के साथ अल्लाह के ज़िक्र में शरीक

www.dawateislami.net

होगा और न उस की ता'रीफ़ करेगा और येह तमाम बातें आदमी के नुक़्सान और उस की ख़राबी का बाइस होती हैं। (کیمیائے سعادت،۲/۶۰۲ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि कीने की वज्ह से इन्सान दीगर गुनाहों और बुराइयों की दलदल में किस त़रह़ फंसता चला जाता है !

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 25)

गोशा नशीनी की वज्ह

जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق तारिकुद्दुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर कहा : तारिकुद्दुन्या होने से मख़्लूक़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ुयूज़ो बरकात से मह़रूम हो गई है ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस के जवाब में मुन्दरिजए ज़ैल दो शे'र पढ़े।

ذَهَبَ الْوَفَاءُ ذِهَابَ اَمْسِ الذَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مُخَايِلٍ وَّ مَآرِبِ
يُفْشُوْنَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَ قُلُوْبُهُمْ مَحْشُوَّةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ा किसी जाने वाले कल की त़रह़ चली गई और लोग अपने ख़यालात व ह़ाजात में ग़र्क़ हो कर रह गए। लोग यूं तो एक दूसरे के साथ इज़्हारे मह़ब्बत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल एक दूसरे के बुग़्ज़ो कीने के बिच्छूओं से लबरेज़ हैं ! (تذکرۃ الاولیاء،ص۲۲)

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस हिकायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने ! सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق लोगों की मुनाफ़क़त वाली रविश से तंग आ कर ख़ल्वत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। उस पाकीज़ा दौर में भी येह सूरते ह़ाल होने लगी थी तो अब तो जो ह़ाल बे ह़ाल है उस का किस से शिकवा कीजिये। आह ! आज कल तो अक्सर लोगों का ह़ाल ही अ़जीब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो एक दूसरे के साथ निहायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और ख़ूब ह़ाल अह़वाल पूछते हैं, हर त़रह़ की ख़ातिर दारी और ख़ूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठन्डी बोतल पिला कर निहाल करते हैं तो कभी चाए पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं। ब ज़ाहिर हंस हंस कर ख़ुश कलामी व क़ीलो क़ाल करते हैं मगर अपने दिल में उस के बारे में बुग़्ज़ो मलाल रखते हैं। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 128)

ज़ाहिरो बातिन हमारा एक हो *येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(19) मस्जिद में दुन्या की बातें करना

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : मस्जिद में दुन्या की बातें करनी मकरूह हैं। मस्जिद में कलाम करना नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है, येह जाइज़ कलाम के मुतअ़ल्लिक़ है नाजाइज़ कलाम के गुनाह का क्या पूछना !

(बहारे शरीअ़त, 3 / 499, ब ह़वाला ردالمحتار،٩٠/٦٩٠)

www.dawateislami.net

उन को अल्लाह से कुछ काम नहीं

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है :

يَأْتِيْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَكُوْنُ حَدِيْثُهُمْ فِيْ مَسَاجِدِهِمْ فِيْ اَمْرِ دُنْيَاهُمْ فَلَا تُجَالِسُوْهُمْ فَلَيْسَ لِلّٰهِ فِيْهِمْ حَاجَةٌ

या'नी लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कुछ काम नहीं। (شعب الایمان،باب فی الصلوات،فصل المشی الی المساجد،۳/۸۶حدیث: ۲۹۶۲)

मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

اَلْمَسْجِدُ بَيْتُ كُلِّ تَقِيٍّ وَتَكَفَّلَ اللّٰهُ لِمَنْ كَانَ الْمَسْجِدُ بَيْتَهُ بِالرَّوْحِ وَالرَّحْمَةِ وَالْجَوَازِ عَلَى الصِّرَاطِ اِلٰى رِضْوَانِ اللّٰهِ اِلَى الْجَنَّةِ

या'नी मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है, जो शख़्स मस्जिद को अपना घर बना ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये राह़त, रह़मत और पुल सिरात़ से गुज़ार कर अपनी रिज़ा और जन्नत तक ले जाने का कफ़ील है।

(الترغیب والترہیب،کتاب الصلاۃ،الترغیب فی لزوم المساجد، ۱/۱۶۹، حدیث:۵۰۴)

फ़ैज़ुल क़दीर शर्हे जामेअ़ सग़ीर में अ़ल्लामा मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है" की वज़ाहत में लिखते हैं : अ़ल्लामा ज़ैन इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : इस ह़दीस से मुराद येह है कि मस्जिद में उन कामों के लिये ज़ियादा देर रुका जाए जिन के लिये मस्जिद बनाई जाती है मसलन ए'तिकाफ़, नमाज़, तिलावत वग़ैरा। बा'ज़ उ़लमाए किराम ने फ़रमाया : इस ह़दीस से येह भी मा'लूम हुवा

www.dawateislami.net

कि येह उम्मत में से ज़ियादा तक़्वा वालों का ठिकाना है लेकिन इस शर्त़ के साथ कि वोह किसी ऐसे काम में मसरूफ़ न हों जिस के लिये मस्जिद नहीं बनाई जाती तो जो मस्जिद को अपनी रिहाइश गाह, जाए तिजारत और दुन्या की बातें करने की जगह बना ले वोह शख़्स क़ाबिले नफ़रत है। (فیض القدیر،٦/٣٤٩،تحت الحدیث:٩٢٠٣)

(ह़िकायत : 26) मस्जिद से सर बाहर निकाल कर जवाब दिया

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن मस्जिद में मुबाह़ (या'नी जाइज़) दुन्यवी बात चीत भी नहीं किया करते थे, ह़ज़रते ख़लफ़ बिन अय्यूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक मरतबा मस्जिद में मौजूद थे कि किसी ने उन से कोई बात पूछी तो पहले उन्हों ने अपना सर मस्जिद से बाहर निकाला फिर उस की बात का जवाब दिया। (فیض القدیر،٦/٣٤٩،تحت الحدیث:٩٢٠٣)

मस्जिद में दुन्या की बातों के ह़वाले से दो अहम सुवाल जवाब

(1) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्‌ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया कि क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि मसाजिद में मुआ़मलाते दुन्या की बातें करने वालों पर क्या मुमानअ़त है और बरोज़े ह़श्र क्या मुवाख़ज़ा होगा ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : दुन्या की बातों के लिये मस्जिद में जा कर बैठना ह़राम है। इश्बाह व नज़ाइर में फ़त्हुल क़दीर से नक़्ल फ़रमाया : "मस्जिद में दुन्या का कलाम नेकियों को ऐसा खाता है जैसे आग लकड़ी को।" येह मुबाह़

www.dawateislami.net

बातों का हुक्म है फिर अगर बातें ख़ुद बुरी हुईं तो उस का क्या ज़िक्र है, दोनों सख़्त ह़राम दर ह़राम, मूजिबे अ़ज़ाबे शदीद है। واللّٰہ تعالٰی اعلم

(फ़तावा रज़विय्या, 8 / 112)

(2) क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि मस्जिद में शोरो शर करना और दुन्या की बातें करना और इसी त़रह़ वुज़ू में दुरुस्त है या नहीं, और अपने पास से ग़ीबत करने वालों और तोहमत रखने वालों और जिन में शेवा मुनाफ़क़त का मुफ़्सिदा का अन्दाज़ पाया जाए निकलवा देना जाइज़ है या नहीं।

अल जवाब : मस्जिद में शोरो शर करना ह़राम है और दुन्यवी बात के लिये मस्जिद में बैठना ह़राम, और नमाज़ के लिये जा कर दुन्यवी तज़्किरा मस्जिद में मकरूह और वुज़ू में बे ज़रूरत दुन्यवी कलाम न चाहिये, और ग़ीबत करने वालों और तोहमत उठाने वालों मुनाफ़िक़ों मुफ़्सिदों को निकलवा देने पर क़ादिर हो तो निकलवा दे जब कि फ़ितना न उठे वरना ख़ुद उन के पास से उठ जाए। واللّٰہ تعالٰی اعلم

(फ़तावा रज़विय्या, 8 / 112)

6 अहम मदनी फूल

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या जिल्द 16 सफ़्ह़ा 311 ता 313 पर मस्जिद में दुन्या की बातें करने के ह़वाले से मुख़्तलिफ़ रिवायात नक़्ल की हैं, इन में से मुन्तख़ब रिवायात पढ़िये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

❁ इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह नस्फ़ी (عَلَيْهِ رَحمۃُ اللهِ القَوِی) ने मदारिक शरीफ़ में ह़दीस नक़्ल की, कि :

اَلْحَدِیْثُ فِی الْمَسْجِدِ یَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ الْبَھِیْمَۃُ الْحَشِیْشَ मस्जिद में दुन्या की बात नेकियों को इस त़रह़ खा जाती है जैसे चोपाया घास को।

(تفسیرنسفی،سورۂ لقمان،تحت الآیۃ:۷،ص ۹۱۶)

❁ ग़मज़ुल उ़यून में ख़ज़ानतुल फ़िक़ह से है :

مَنْ تَکَلَّمَ فِی الْمَسَاجِدِ بِکَلَامِ الدُّنْیَا اَحْبَطَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَمَلَ اَرْبَعِیْنَ سَنَۃً जो मस्जिद में दुन्या की बात करे **अल्लाह** तआ़ला उस के चालीस बरस के अ़मल अकारत फ़रमा दे। (غمزعیون البصائر،۳/۱۹۰)

येह रिवायात नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : اَقُوْلُ:وَمِثْلُہٗ لَایُقَالُ بِالرَّاْیِ (या'नी मैं कहता हूं कि इस क़िस्म की बात राए और अटकल से नहीं कही जा सकती। ت)

❁ रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

سَیَکُوْنُ فِیْ اٰخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ یَکُوْنُ حَدِیْثُھُمْ فِیْ مَسَاجِدِ ھِمْ لَیْسَ لِلّٰہِ فِیْھِمْ حَاجَۃٌ

या'नी आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे कि मस्जिद में दुन्या की बातें करेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उन लोगों से कुछ काम नहीं।

(مواردالظمآن الی زوائدابن حبان،کتاب المواقیت،باب الجلوس فی المسجد لغیر الطاعۃ،ص۹۹،حدیث:۳۱۱)

❁ ह़दीक़ए नदिया शर्हे त़रीक़ए मुह़म्मदिया में है : दुन्या की बात जब कि फ़ी नफ़्सिही मुबाह़ और सच्ची हो मस्जिद में बिला ज़रूरत

www.dawateislami.net

करनी ह़राम है ज़रूरत ऐसी जैसे मो'तकिफ़ अपने ह़वाइजे ज़रूरिया के लिये बात करे, फिर ह़दीसे मज़्कूर ज़िक्र कर के फ़रमाया : मा'नए ह़दीस येह हैं कि अल्लाह तआ़ला उन के साथ भलाई का इरादा न करेगा और वोह नामुराद व मह़रूम व ज़ियांकार और इहानत व ज़िल्लत के सज़ावार हैं। (حديقه نديه،۲/۳۱٦)

❁ इसी में है :

وَرُوِیَ اَنَّ مَسْجِدًا مِّنَ الْمَسَاجِدِ اِرْتَفَعَ اِلَی السَّمَاءِ شَاكِيًا مِّنْ اَهْلِهٖ يَتَكَلَّمُوْنَ فِيْهِ بِكَلَامِ الدُّنْيَا فَاسْتَقْبَلَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَقَالُوْا بُعِثْنَا بِهَلَاكِهِمْ

या'नी मरवी हुवा कि एक मस्जिद अपने रब के ह़ुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं मलाइका उसे आते मिले और बोले हम उन के हलाक करने को भेजे गए हैं। (حديقه نديه،۲/۳۱۸)

❁ इसी में है :

وَرُوِیَ اَنَّ الْمَلٰٓئِكَةَ يَشْكُوْنَ اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی مِنْ نَتْنِ فَمِ الْمُغْتَابِيْنَ وَالْقَائِلِيْنَ فِی الْمَسَاجِدِ بِكَلَامِ الدُّنْيَا

या'नी रिवायत किया गया कि जो लोग ग़ीबत करते हैं (जो सख़्त ह़राम और ज़िना से भी अशद है) और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से वोह गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर उन की शिकायत करते हैं। (حديقه نديه،۲/۳۱۸)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो ह़राम व नाजाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा ! (फ़तावा रज़विय्या, 16 / 312)

www.dawateislami.net

(हिकायत : 27)

मस्जिद में बातें करने वालों को नसीहत

नासिहुल उम्मह अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی हदीक़ए नदिया में फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं मुल्के शाम के शहर दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद "जामेअ़ बनू उमय्या" में दर्स दे रहा था कि इस दौरान कुछ लोग मेरे इर्द गिर्द दुन्यावी बातें करने और क़हक़हे लगाने लगे। मैं ने उ़मूमी त़रीक़े पर (या'नी बिग़ैर नाम लिये) उन की इस्लाह़ व ख़ैर ख़्वाही की ग़रज़ से क़दरे बुलन्द आवाज़ से प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद बयान किया कि आख़िरी ज़माने में कुछ लोग मस्जिदों में दुन्या की बातें करेंगे।

(صحیح ابن حبان،کتاب التاریخ،باب اخبارہ عما یکون۔۔۔الخ، جزء:۸، ۶/۲۶۷، حدیث:۶۷۲۳)

मैं ने यहां तक कहा : ऐ अल्लाह के बन्दो ! यहूदो नसारा के गिरजा घरों और कनीसों को देखो ! वोह किस त़रह़ उन को दुन्या की बातों से बचाते हैं हालांकि उन के गिरजा घर शयात़ीन के ठिकाने हैं, तो ऐ मुसलमानो ! तुम अपनी मस्जिदों को दुन्या की बातों से क्यूं नहीं बचाते ! हालांकि तुम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का येह इरशाद भी पढ़ते हो :

فِیْ بُیُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ یُذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ ۙ یُسَبِّحُ لَهٗ فِیْهَا بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾

(پ۱۸،النور:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन घरों में जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और उन में उस का नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं उन में सुब्ह़ और शाम।*

www.dawateislami.net

लेकिन मेरी बात पर तवज्जोह देने और इस पर अ़मल करने के बजाए उन्हों ने मुझ से ए'राज़ किया बल्कि अपने जाहिलों के ज़रीए़ मुझे अज़िय्यत देने पर उतर आए जिस की वज्ह से मैं ने वहां दर्स देना छोड़ दिया और अब मैं "जामेए़ बनू उमय्या" के क़रीब अपने घर पर दर्स देता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और उन की इस्लाह़ फ़रमाए। (حدیقه ندیه،۲/۳۱۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20) ग़ीबत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत भी उन गुनाहों में से है जिन की वज्ह से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : اَلْغِیْبَۃُ تَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ النَّارُ الْحَطَبَ या'नी ग़ीबत नेकियों को इस तरह़ खा जाती है जैसे आग लकड़ी को। (شرح ابن بطال،کتاب الادب،باب الغیبة،۹/۲۴۵) इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : आग भी ख़ुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी ग़ीबत बन्दे की नेकियों को जला कर रख देती है। (احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان،بیان العلاج۔۔۔الخ،۳/۱۸۳)

वालिदैन मेरी नेकियों के ज़ियादा ह़क़दार हैं

शारेहे़ बुख़ारी, अबुल ह़सन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली बिन ख़लफ़ अल मा'रूफ़ इब्ने बत्ताल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : चूंकि ग़ीबत एक बहुत बड़ा गुनाह और आ'माल का सवाब ज़ाएअ़ होने का

www.dawateislami.net

सबब है इस लिये उ़लमा की एक जमाअ़त तमाम लोगों की ग़ीबत से इजतिनाब करती थी यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं किसी की ग़ीबत करता तो अपने वालिदैन की करता क्यूंकि वोह दोनों तमाम लोगों से ज़ियादा मेरी नेकियों के ह़क़दार हैं। (شرح ابن بطال،کتاب الادب،باب الغیبۃ،۹/۲٤٥)

मेरी नेकियां कहां गई ?

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा : मैं ने जो फ़ुलां फ़ुलां नेकियां की थीं वोह कहां गईं ? कहा जाएगा : तू ने जो ग़ीबतें की थीं इस वज्ह से मिटा दी गई हैं।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب،کتاب الادب،الترھیب من الغیبۃ۔۔۔الخ، ۳/٤۰٦،حدیث:٤۳٦٤)

माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ग़ीबत करने वाले की सरज़निश करते (या'नी डांट पिलाते) हुवे फ़रमाते हैं : ऐ झूटे इन्सान ! तू अपने दोस्तों को दुन्या का ह़क़ीर माल देने से तो बुख़्ल करता रहा मगर आख़िरत का माल (या'नी नेकियों का ख़ज़ाना) तू ने अपने दुश्मनों पर लुटा दिया ! न तेरा दुन्यवी बुख़्ल क़ाबिले क़बूल न ग़ीबतें कर कर के नेकियां लुटाने वाली सख़ावत मक़्बूल।

(تَنبِیہُ الْغافِلِین، ص۸۷)

www.dawateislami.net

अपनी बुराइयां याद कर लिया करो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का फ़रमान है : اِذَا اَرَدْتَ اَنْ تَذْكُرَ عُيُوْبَ صَاحِبِكَ فَاذْكُرْ عُيُوْبَكَ जब तुम अपने साथी की बुराइयां बयान करना चाहो तो अपनी बुराइयां याद कर लिया करो । (الموسوعة لابن ابی الدنیا،باب الغیبة و ذمها، ٧/١٣٦ ، رقم:١٩٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(21) ता'रीफ़ की ख़्वाहिश

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहृत निशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़ाअ़त को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की महृब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं ।

(فردوس الاخبار،١/٢٢٣،حدیث:١٥٦٧)

(हि़कायत : 28)

एक सुवाल के 2 जवाब !

हज़रते सय्यिदुना त़ाहिर बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने एक मरतबा किसी से पूछा : आप को इराक़ आए कितना अ़र्सा हो गया है ? जवाब दिया : मैं बीस साल से इराक़ में हूं और तीस साल से रोज़े रख रहा हूं, फ़रमाया : मैं ने आप से एक सुवाल पूछा था आप ने जवाब दो दिये ! (या'नी येही काफ़ी था कि आप इराक़ में इतने अ़र्से से हैं, रोज़े का ज़िक्र किस लिये कर दिया ?) (ادب الدنیا والدین،ص ٨٦)

www.dawateislami.net

उस का अ़मल बेकार हो गया

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी नेक अ़मल पर अपनी ता'रीफ़ की उस का शुक्र ज़ाएअ़ और अ़मल बेकार हो गया।

(كنزالعمال،جزء:٣،٢/٢٠٦،حديث:٧٦٧٤)

(हि़कायत : 29)

मेरा रोज़ा भी है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक आ'राबी नमाज़ पढ़ रहा था और बहुत देर तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहा, उस के क़रीब कुछ लोग बैठे हुवे थे, जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो लोगों ने बोला : तुम तो बड़ी अच्छी नमाज़ पढ़ते हो, उस आ'राबी ने कहा नमाज़ तो है ही साथ साथ मैं रोज़े से भी हूं, येह बात सुन कर उस मजलिस में बैठे हुवे एक दूसरे आ'राबी ने येह शे'र कहा :

صَلّٰى فَاَعْجَبَنِىْ وَصَامَ فَرَابَنِىْ   نَحِّ الْقُلُوْصَ عَنِ الْمُصَلِّى الصَّائِمِ

तर्जमा : उस ने नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ मुझे अच्छी लगी, उस ने रोज़ा रखा जिस ने मुझे तरद्दुद में डाल दिया, लिहाज़ा अपने ऊंटों को इस नमाज़ी और रोज़ेदार से दूर ले जाओ ! (या'नी येह आदमी इस क़दर इबादत गुज़ार है और साथ साथ रियाकारी का भी शिकार है, इस से दूर भागो ! इस के पास बैठने में कोई फ़ाएदा नहीं है)। (ادب الدنيا والدين،ص ٨٦)

इख़्लास कामिल हो तो वाह वाह से सवाब कम नहीं होता

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

www.dawateislami.net

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : अगर ग़ाज़ी में इख़्लास हो तो लोगों की वाह वाह से सवाब कम नहीं होगा। येह तो रब की त़रफ़ से दुन्यवी इन्आ़म है। सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) और ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दोनों जहां में वाह वाह हो रही है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 191)

न किसी वाह की ख़्वाहिश न किसी आह का ग़म

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का फ़ारसी शे'र है :

نه مرا نُوش زِ تَحسِين نه مَرَا نَيْش زِ طَعْن　　نَه مَرَا گوش بَمَدْحے نَه مَرَا هوش ذَمے

مَنَم وَ كُنْجِ خُمُولِي كه نَگُنْجَد دَرْوَے　　جُزمَنْ وَ چَنْد كِتَابے وَ دَوَات وَ قَلَمے

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 446)

इन्ही अश्आ़र की तर्जमानी किसी ने उर्दू रुबाई में इस त़रह़ की है :

न सताइश की तमन्ना न मुझे ख़त़रए ज़म
न किसी वाह की ख़्वाहिश न किसी आह का ग़म
मैं हूं उस गोशए तन्हाई का रहने वाला
कि जहां चन्द किताबें हैं, दवात और क़लम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(22) बिला इजाज़ते शरई कुत्ता पालना

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जानवरों की हि़फ़ाज़त करने

www.dawateislami.net

वाले या शिकारी कुत्ते के सिवा कोई और कुत्ता पाले तो रोज़ाना उस के अ़मल से दो क़ीरात़ कम होंगे।

(بخاری،کتاب الذبائح ـــ الخ،باب من اقتنی کلبا۔۔الخ،۳/۵۵۱،حدیث:۵۴۸۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : अ़मल से मुराद नेक आ'माल का सवाब है न कि अस्ल अ़मल क्यूंकि मज़्हबे अह्ले सुन्नत येह है कि किसी गुनाह की वज्ह से नेकी बरबाद नहीं होती नेकियां सिर्फ़ कुफ़्र से बरबाद होती हैं और कुत्ता पालना गुनाह है कुफ़्र नहीं। मत़लब येह है कि नेकियों का जो सवाब कुत्ता न पालने वाले को मिलता है वोह कुत्ता पालने वाले को नहीं मिलता, इस कमी की वज्ह येह है कि ऐसे कुत्ते से रह़मत के फ़िरिश्ते घर में नहीं आते या इस लिये कि कुत्ते से लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है या इस लिये कि कुत्ते वाले घर के बरतन और कपड़े मश्कूक होते हैं कि कभी कुत्ता येह चीज़ें चाट लेता है, घरवालों को ख़बर नहीं होती लिहाज़ा जितनी यक़ीनी पाकी व त़हारत बिग़ैर कुत्ते वाले घर में होती है ऐसी त़हारत कुत्ते वाले घर में नहीं होती येह तह़क़ीक़ ज़रूर ख़याल में रखी जाए। (मिरक़ात)

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं : क़ीरात़ एक ख़ास वज़्न का नाम है, यहां क़ीरात़ फ़रमाना समझाने के लिये है वरना सवाबे आ'माल यहां के बाटों से नहीं तोला जाता। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 656)

कुत्ता पालना कब जाइज़ है ?

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : जानवर या

www.dawateislami.net

ज़राअ़त या खेती या मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये या शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है और येह मक़ासिद न हों तो पालना नाजाइज़ और जिस सूरत में पालना जाइज़ है उस में भी मकान के अन्दर न रखे अलबत्ता अगर चोर या दुश्मन का ख़ौफ़ है तो मकान के अन्दर भी रख सकता है। (बहारे शरीअ़त, 2 / 809)

लड़ाने या दौड़ाने के लिये कुत्ता न पाला जाए

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی लिखते हैं : शिकार करने के लिये, खेती की ह़िफ़ाज़त के लिये, मवेशियों की ह़िफ़ाज़त के लिये (और) मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये इन चार मक़्सदों के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है। बाक़ी इन के सिवा मसलन खेलने के लिये, दिल बस्तगी और तफ़रीह़ के लिये, लड़ाने या दौड़ाने के लिये या किसी और काम के लिये कुत्ता पालना नाजाइज़ व ममनूअ़ है। (जहन्नम के ख़त़रात, स. 185)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(23) आपस का फ़साद

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आपस के फ़साद से बचो क्यूंकि येह मूंड देने वाली चीज़ है। (ترمذی،کتاب صفة القیامة،باب:٥٦، ٢٢٨/٤،حدیث:٢٥١٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ذَاتَ بَیۡن के मा'ना आपस वाली चीज़, سُوۡء के मा'ना बुराई या'नी आपस वाली चीज़

www.dawateislami.net

की बुराई से बचो। न तो तुम ख़ुद आपस में रन्जिश रखो न दो शख़्सों में रन्जिश डालो ग़ीबत वग़ैरा कर के कि येह बद तरीन जुर्म है बल्कि बहुत से जुर्मों की जड़ है। "येह मूंड देने वाली चीज़ है" के तह़त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : या तो इस मुजरिम की नेकियां बरबाद हो जाने का सबब है या जिस मज़्लूम के साथ येह बरतावा किया गया उस के गुनाह मुआ़फ़ हो जाने का सबब, उस के नामए आ'माल को गुनाहों से ऐसा साफ़ कर देती है जैसे उस्तरा सर को। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 616)

(ह़िकायत : 30)

शैत़ान की उंगली

एक शख़्स ने शैत़ान को देखा जो अपनी उंगली उठाए जा रहा था। उस ने शैत़ान से पूछा : येह तुम अपनी उंगली उठाए हुवे क्यूं जा रहे हो ? शैत़ान ने कहा : मैं अपनी उंगली से भी बड़ा काम निकालता हूं, लोग जो आपस में लड़ते झगड़ते और फ़ित्ना व फ़साद करते हैं वोह इसी उंगली का खेल होता है। उस शख़्स ने कहा : येह कैसे हो सकता है ? शैत़ान ने कहा : चलो मैं तुम को दिखाऊं। येह सामने जो शहर है उसे मेरी येह उंगली थोड़ी देर में तबाहो बरबाद कर देगी, मैं सिर्फ़ अपनी येह उंगली लगाऊंगा इस के बा'द लड़ना भिड़ना और क़त्लो ग़ारत ख़ुद ही शुरूअ़ कर देंगे। शैत़ान उस शख़्स के साथ शहर में दाख़िल हुवा, एक बाज़ार में ह़ल्वाई मिठाई बनाने के लिये चीनी घोल कर उस का शीरा बनाने के लिये उसे बड़े बरतन में गर्म कर रहा था जिस में से शीरा उबल रहा था। शैत़ान ने कहा : अब तुम देखना मेरी उंगली क्या काम करने लगी है। शैत़ान ने शीरे में अपनी उंगली डाल कर थोड़ा सा शीरा निकाल कर उसे दीवार पर चिपका दिया और कहा : अब देखो

www.dawateislami.net

येह शहर तबाह होने वाला है। दीवार पर लगे हुवे उस शीरे पर मख्खियां आ कर बैठीं, मख्खियों का अम्बोह देख कर एक छिपकली उन मख्खियों पर झपटने के लिये दीवार पर नुमूदार हुई, ह़ल्वाई की एक बिल्ली थी। उस बिल्ली ने छिपकली को देखा तो वोह उस पर झपटने को तय्यार हो गई, दो फ़ौजी बाज़ार से गुज़र रहे थे जिन के साथ उन का कुत्ता भी था। कुत्ते ने बिल्ली को देखा तो एक दम उस पर ह़म्ला कर दिया, बिल्ली ने भागने के लिये छलांग लगाई तो शीरे के बरतन में गिर कर मर गई। ह़ल्वाई ने अपनी बिल्ली को मरते देखा तो कुत्ते को मार डाला, येह मन्ज़र देख कर फ़ौजियों ने ह़ल्वाई को हलाक कर दिया। ह़ल्वाई के अ़ज़ीज़ों को पता चला तो उन्हों ने फ़ौजियों को मार डाला, जब फ़ौज को अपने दोनों फ़ौजियों के मारे जाने का इ़ल्म हुवा तो सारी फ़ौज ने आ कर शहर को तहस नहस कर दिया।

शैत़ान ने कहा : देखा मेरी उंगली का करिश्मा ! मैं ने सिर्फ़ अपनी उंगली ही लगाई थी, इस के बा'द येह लोग लड़ मरे खुद हैं।

(शैत़ान की ह़िकायात, स. 150)

(24) नुजूमी के पास जाना

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो कोई नुजूमी के पास जाए फिर उस से कुछ पूछे तो उस की चालीस शब की नमाज़ें क़बूल न होंगी।

(مسلم،کتاب السلام،باب تحریم الکهانة۔۔۔الخ، ص ۱۲۲۵، حدیث: ۲۲۳۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : उसे (या'नी

www.dawateislami.net

नुजूमी को) सच्चा समझ कर उस से आइन्दा ग़ैबी ख़बरें पूछने के लिये गया उस की वोह सज़ा है जो यहां मज़्कूर है लेकिन अगर कोई उसे झूटा समझ कर लोगों को उस का झूट ज़ाहिर करने के लिये उस के पास गया उस से कुछ पूछा ताकि उस की झूटी ख़बर लोगों को सुना दे उस की येह सज़ा नहीं।

(“चालीस शब की नमाज़ें क़बूल न होंगी” के तह्त मुफ़्ती साहिब लिखते हैं) या'नी उस की येह नमाज़ें अदा हो जाएंगी अल्लाह के हां इन का सवाब न मिलेगा जैसे ग़सब शुदा ज़मीन में नमाज़ कि अगर्चे अदा तो हो जाती है मगर उस पर सवाब नहीं मिलता लिहाज़ा उन नमाज़ों का लौटाना उस पर लाज़िम नहीं। ख़याल रहे कि नेकियों से गुनाह तो मुआफ़ हो जाते हैं मगर गुनाहों से नेकियां बरबाद नहीं होतीं वोह तो सिर्फ़ इर्तिदाद से बरबाद होतीं हैं (मिरक़ात) और जब नमाज़ें ही क़बूल न हुईं तो दूसरी इबादतें भी क़बूल न होंगी बा'ज़ शारेहीन ने फ़रमाया कि चालीस रातों की नमाज़ें से मुराद तहज्जुद की नमाज़ें हैं। फ़राइज़ो वाजिबात क़बूल हो जाएंगे मगर हक़ येह है रातों से मुराद दिन व रात सब हैं और कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (اشعہ) दूसरी ह़दीस में है कि ऐसे शख़्स की चालीस दिन तक तौबा क़बूल नहीं होती बहर हाल नुजूमियों से ग़ैब की ख़बरें पूछना बदतरीन गुनाह है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 270)

नुजूमी को हाथ दिखाना कैसा

इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का

www.dawateislami.net

भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बतौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं हक़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है, इसी को हदीस में फ़रमाया : فَقَدْ كَفَرَ بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّد या'नी उस ने मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली शै का इन्कार किया और अगर बतौरे ए'तिक़ाद व तयक्कुन (या'नी यक़ीन रखने के) न हो मगर मेल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है, इसी को हदीस में फ़रमाया : لَمْ يَقْبَلِ اللهُ لَهُ صَلٰوةَ اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا अल्लाह तआला चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा, और अगर बतौरे हज़्ल व इस्तिहज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के तौर पर) हो तो अ़बस (या'नी बेकार) व मकरूह व हमाक़त है, हां ! अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आजिज़ करने के लिये) हो तो हरज नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 155)

(25) शौहर की नाशुक्री करना

सरकारे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا قَالَتِ الْمَرْاَةُ لِزَوْجِهَا مَا رَاَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهَا या'नी जब कोई औरत अपने शौहर से कहे कि मैं ने कभी तुम से कोई भलाई नहीं देखी तो उस का अ़मल बरबाद हो गया। (جمع الجوامع، ۱/۲۲۹، حديث:۱٦۳۷)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई औरत उन एहसानात को झुटलाए जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शौहर के ज़रीए उस पर फ़रमाए हैं तो उस की सज़ा में उस के अ़मल बातिल हो जाएंगे या'नी वोह उन के सवाब से महरूम हो जाएगी मगर येह कि वोह अपनी इस बात से रुजूअ़ कर के

www.dawateislami.net

उस के एह्सान का ए'तिराफ़ कर ले। मुमकिन है कि इस फ़रमाने आ़लीशान से मक़्सूद ज़ज्रो तौबीख़ और उस अ़मल से नफ़रत दिलाना हो। अगर येह बात ह़क़ीक़त पर मुश्तमिल हो (या'नी वाक़ेई बीवी को अपने शौहर से कभी कोई भलाई न पहुंची हो) तो इस सूरत में वोह इस वई़द की मुस्तह़िक़ न होगी। (فیض القدیر،۱/۵۲۷،تحت الحدیث:۷۷۹)

(26) ह़राम माल कमाना

मन्क़ूल है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुछ लोगों को पेश किया जाएगा जिन के पास तिहामा पहाड़ के बराबर नेकियां होंगी लेकिन जब उन्हें लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की तमाम नेकियों को बाति़ल क़रार देगा और फिर उन्हें दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! इस की क्या वज्ह है ? इरशाद फ़रमाया : वोह लोग नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते, ज़कात देते और ह़ज करते थे लेकिन जब उन के सामने कोई ह़राम चीज़ आती थी तो उसे ले लेते थे चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के आ'माल को बाति़ल कर दिया। (کتاب الکبائر،ص۱۳۶)

ह़लाल खाना इस्लाह़ के लिये ज़रूरी है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی नक़्ल फ़रमाते हैं : हनफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی से किसी ने अ़र्ज़ की : आप ने इल्मे तसव्वुफ़ से मुतअ़ल्लिक़ कोई तस्नीफ़ क्यूं

www.dawateislami.net

नहीं फ़रमाई ? फ़रमाया : मैं ने इस इल्म में एक किताब तस्नीफ़ की है, पूछा : वोह कौन सी ? फ़रमाया : "كِتَابُ الْبُيُوْع" (वोह किताब जिस में ख़रीदो फ़रोख़्त के मुतअ़ल्लिक़ मसाइल मौजूद हों) क्यूंकि जिसे अपनी ख़रीदो फ़रोख़्त के जाइज़ो नाजाइज़ होने का इल्म नहीं होगा वोह ह़राम माल खाएगा, और जो ह़राम खाए उस की इस्लाह़ कभी नहीं हो सकती।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، ۹/۱۳۳، تحت الحدیث:۵۲۸۳)

ह़राम के एक दिरहम का असर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : जिस ने 10 दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और उस में एक दिरहम ह़राम का था तो जब तक वोह लिबास उस के बदन पर रहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने कानों में उंगलियां डाल कर इरशाद फ़रमाया : अगर मैं ने येह बात ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से न सुनी हो तो मेरे कान बहरे हो जाएं। (مسند احمد، ۲/۴۱۶، حدیث:۵۷۳۶)

(ह़िकायत : 31)

दुआ़ क़बूल न होने का सबब

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी मक़ाम से गुज़रे तो देखा कि एक शख़्स हाथ उठाए रो रो कर बड़े रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ में मसरूफ़े दुआ़ था। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उसे देखते रहे फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने इस बन्दे की दुआ़ क्यूं नहीं क़बूल कर रहा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप

www.dawateislami.net

عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! अगर येह शख़्स इतना रोए, इतना रोए कि इस का दम निकल जाए और अपने हाथ इतने बुलन्द कर ले कि आस्मान को छू लें तब भी मैं इस की दुआ़ क़बूल न करूंगा । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! इस की क्या वज्ह है ? इरशाद हुवा : येह ह़राम खाता और ह़राम पहनता है और इस के घर में ह़राम माल है ।

(عیون الحکایات،الحکایۃ الثانیۃ والخمسون بعد الثلاثمائۃ،ص۳۱۲)

माले ह़राम से जान छुड़ा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई शख़्स जितना भी माले ह़राम जम्अ़ कर ले, एक दिन ऐसा आएगा कि उसे येह सारा माल दुन्या में ही छोड़ कर ख़ाली हाथ दुन्या से जाना होगा क्यूंकि कफ़न में थेली होती है न क़ब्र में तिजोरी, फिर क़ब्र को नेकियों का नूर रौशन करेगा न कि सोने चांदी की चमक दमक ! अल ग़रज़ येह दौलत फ़ानी है और हिरती फिरती छाऊं है कि आज एक के पास तो कल किसी दूसरे के पास और परसों किसी तीसरे के पास ! आज का साहिबे माल कल कंगाल और आज का कंगाल कल माला माल हो सकता है, तो फिर माले ह़राम जैसी नापाएदार शै की वज्ह से अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्यूं नाराज़ किया जाए ! इस लिये हमें चाहिये कि आज और अभी अपने मालो अस्बाब पर ग़ौर कर लें कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं इस में ह़राम तो शामिल नहीं, अगर ऐसा हो तो हाथों हाथ तौबा करें और माले ह़राम से जान छुड़ा लें और अगर ह़राम माल ख़र्च हो चुका है तो भी तौबा कीजिये और दर्जे ज़ैल त़रीक़े पर अ़मल कीजिये ।

www.dawateislami.net

माले ह़राम से नजात का त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ अपने रिसाले "**पुर असरार भिकारी**" के सफ़ह़ा 26 पर लिखते हैं : **ह़राम** माल की दो सूरतें हैं : (1) एक वोह **ह़राम माल** जो चोरी, रिश्वत, ग़सब और इन्हीं जैसे दीगर ज़राएअ़ से मिला हो इस को ह़ासिल करने वाला इस का अस्लन या'नी बिल्कुल मालिक ही नहीं बनता और इस माल के लिये शरअ़न फ़र्ज़ है कि जिस का है उसी को **लौटा** दिया जाए वोह न रहा हो तो **वारिसों** को दे और उन का भी पता न चले तो बिला निय्यते सवाब फ़क़ीर पर **ख़ैरात** कर दे (2) दूसरा वोह **ह़राम माल** जिस में क़ब्ज़ा कर लेने से मिल्के ख़बीस ह़ासिल हो जाती है और येह वोह माल है जो किसी अ़क़्दे फ़ासिद के ज़रीए़ ह़ासिल हुवा हो जैसे सूद या दाढ़ी मूंडने या ख़शख़शी करने की उजरत वग़ैरा। इस का भी वोही हुक्म है मगर फ़र्क़ येह है कि उस को मालिक या उस के वुरसा ही को **लौटाना** फ़र्ज़ नहीं अव्वलन फ़क़ीर को भी बिला निय्यते सवाब **ख़ैरात** में दे सकता है। अलबत्ता **अफ़्ज़ल** येही है कि मालिक या वुरसा को लौटा दे। (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा रज़विय्या, 23 / 551, 552 वग़ैरा)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(27) फ़र्ज़ के बा'द सुन्नतें पढ़ने में ताख़ीर करना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी नमाज़ की सुन्नतें पढ़ कर फ़र्ज़ पढ़ने से पहले या फ़र्ज़ पढ़ कर सुन्नतें पढ़ने से पहले बात चीत नहीं करनी चाहिये कि इस से सवाब कम हो जाता है, **मेरे आक़ा**

www.dawateislami.net

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया : इमाम ने ज़ोहर के वक़्त चार रक्अ़त नमाज़ सुन्नत अदा करने के बा'द कलामे दुन्या किया बा'द इस के नमाज़ पढ़ाई तो उस फ़र्ज़ नमाज़ में कुछ नुक़्सान आएगा या नहीं ? और नमाज़े सुन्नत का सवाब कम हो जाएगा या बातिल हो जाएगी ?

जवाब इरशाद फ़रमाया : फ़र्ज़ में नुक़्सान की कोई वज्ह नहीं कि सुन्नतें बातिल न होंगी, हां उस का सवाब कम हो जाता है। तन्वीरुल अब्सार में है : وَلَوْ تَكَلَّمَ بَيْنَ السُّنَّةِ وَالْفَرْضِ لَا يُسْقِطُهَا وَلٰكِن يَّنْقُصُ ثَوَابُهَا (या'नी अगर कोई सुननो फ़राइज़ के दरमियान कलाम करता है तो इस से सुनन साक़ित नहीं हो जाती मगर इन के सवाब में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है ت) । (درمختار،۲/۵۵۸) واللّٰه تعالٰى اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 7 / 448)

सुन्नते क़ब्लिय्या का दोबारा पढ़ लेना बेहतर है

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि सुन्नतें पढ़ने के बा'द अगर गुफ़्त्गू की जाए तो फिर इआ़दा सुन्नतों का करे या नहीं ?

जवाब दिया : इआ़दा बेहतर है कि क़ब्ली सुन्नतों के बा'द कलाम वग़ैरा अफ़आ़ले मुनाफ़िये तह़रीमा करने से सुन्नतों का सवाब कम हो जाता है और बा'ज़ के नज़्दीक सुन्नतें ही जाती रहती हैं तो तक्मीले सवाब व ख़ुरूज अ़निल इख़्तिलाफ़ (या'नी इख़्तिलाफ़े फ़ुक़हा से निकलने) के लिये इआ़दा बेहतर है जब कि इस के सबब शिर्कते जमाअ़त में ख़लल न पड़े मगर फ़ज्र की सुन्नतें कि इन का इआ़दा जाइज़ नहीं। واللّٰه تعالٰى اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 7 / 449)

www.dawateislami.net

सुन्नते बा'दिय्या की 3 सुन्नतें

(1) जिन फ़र्ज़ों के बा'द सुन्नतें हैं उन में बा'दे फ़र्ज़ कलाम न करना चाहिये अगर्चे सुन्नतें हो जाएंगी मगर सवाब कम हो जाएगा और सुन्नतों में ताख़ीर भी मकरूह है इसी त़रह़ बड़े बड़े औरादो वज़ाइफ़ की भी इजाज़त नहीं। (غُنية المتملی،ص۳٤۳)

(2) (फ़र्ज़ों के बा'द) क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ़ पर क़नाअ़त चाहिये वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, 1 / 539)

(3) सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान कलाम करने से अस्ह़ (या'नी दुरुस्त तरीन) येही है कि सुन्नत बाति़ल नहीं होती अलबत्ता सवाब कम हो जाता है। येही हुक्म हर उस काम का है जो मुनाफ़िये तह़रीमा है।

(تَنوِيرُ الْاَبْصَار، ٢/٥٥٨) (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 111)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : सुन्नते बा'दिय्या में अगर खाना लाया गया और बद मज़ा हो जाने का अन्देशा है तो खाना खा ले फिर सुन्नत पढ़े मगर वक़्त जाने का अन्देशा हो तो पढ़ने के बा'द खाए और बिला उ़ज़्र सुन्नते बा'दिय्या की भी ताख़ीर मकरूह है अगर्चे अदा हो जाएगी। (ردالمحتار،٢/٥٥٩)(बहारे शरीअ़त, 1 / 666)

(28) नमाज़ी के आगे से गुज़रना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने (दौराने नमाज़) अपने आगे से गुज़रने वाले एक शख़्स से फ़रमाया : तुम्हें ऐसा करने पर किस चीज़ ने उभारा ? उस ने पूछा : मैं ने क्या किया है ? इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तुम अपने भाई की नमाज़ के सामने से गुज़रे हो और अपने एक या दो सालह अ़मल की इमारत गिरा दी है। (تاريخ دمشق،٣٠/٣٥٥)

सुतरे के मदनी फूल

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : मुसल्ली (या'नी नमाज़ पढ़ने वाले) के आगे से गुज़रना बहुत सख़्त गुनाह है। ह़दीस में फ़रमाया : कि इस में जो कुछ गुनाह है अगर गुज़रने वाला जानता तो चालीस तक खड़े रहने को गुज़रने से बेहतर जानता, रावी कहते हैं : मैं नहीं जानता कि चालीस दिन कहे या चालीस महीने या चालीस बरस।

(مسلم،ص٢٦٠،حديث:٥٠٧)

❁ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सौ बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता। (ابن ماجه،١/٥٠٦،حديث:٩٤٦) ❁ इमाम मालिक ने रिवायत किया कि का'ब अह़बार फ़रमाते हैं : नमाज़ी के सामने गुज़रने वाला अगर जानता कि उस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता। (الموطا، ١/١٥٤، رقم: ٣٧١) (बहारे शरीअ़त, 1 / 614) ❁ मैदान और बड़ी मस्जिद में मुसल्ली के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना नाजाइज़ है, मौज़ए सुजूद से मुराद येह है कि क़ियाम की ह़ालत में सजदे की जगह की त़रफ़ नज़र करे तो जितनी दूर तक निगाह फेले वोह मौज़ए सुजूद है, इस के दरमियान से गुज़रना नाजाइज़ है, मकान और छोटी मस्जिद में क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं अगर सुतरा न हो। (فتاوى هنديه،١/١٠٤) (बहारे शरीअ़त, 1 / 615) ❁ मुसल्ली

www.dawateislami.net

के आगे सुतरा हो या'नी कोई ऐसी चीज़ जिस से आड़ हो जाए, तो सुतरा के बा'द से गुज़रने में कोई ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1 / 615) ❁ सुतरा बक़दरे एक हाथ के ऊंचा और उंगली बराबर मोटा हो और ज़ियादा से ज़ियादा तीन हाथ ऊंचा हो। (الدر المختار ورد المحتار، ٢/ ٤٨٤) (बहारे शरीअ़त, 1 / 615) ❁ इमाम का सुतरा मुक़्तदी के लिये भी सुतरा है, उस को जदीद सुतरा की ह़ाजत नहीं, तो अगर छोटी मस्जिद में भी मुक़्तदी के आगे से गुज़र जाए जब कि इमाम के आगे से न हो ह़रज नहीं। (رد المحتار، ٢/ ٤٨٧) ❁ दरख़्त और जानवर और आदमी वग़ैरा का भी सुतरा हो सकता है कि उन के बा'द गुज़रने में कुछ ह़रज नहीं। (غنية المتملى، ص ٣٦٧) ❁ मगर आदमी को इस ह़ालत में सुतरा किया जाए जब कि उस की पीठ मुसल्ली की त़रफ़ हो कि मुसल्ली की त़रफ़ मुंह करना मन्अ़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, 1 / 616)

बीमारी बहुत बड़ी ने'मत है

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बीमारी भी एक बहुत बड़ी ने'मत है, इस के मनाफ़ेअ़ बे शुमार हैं, अगर्चे आदमी को ब ज़ाहिर इस से तक्लीफ़ पहुंचती है मगर ह़क़ीक़तन राह़त व आराम का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हाथ आता है। येह ज़ाहिरी बीमारी जिस को आदमी बीमारी समझता है, ह़क़ीक़त में रूह़ानी बीमारियों का एक बड़ा ज़बरदस्त इलाज है। ह़क़ीक़ी बीमारी अमराज़े रूह़ानिया (मसलन दुन्या की मह़ब्बत, दौलत की ह़िर्स, बुख़्ल, दिल की सख़्ती वग़ैरा) हैं कि येह अलबत्ता बहुत ख़ौफ़ की चीज़ है और इसी को मरज़े मोहलिक (مُہۡلِک या'नी हलाक करने वाली बीमारी) समझना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 799)

www.dawateislami.net

वडेरे की तौबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने और घर में सुन्नतों भरा मदनी माहोल बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, तरग़ीबो तह्रीस के लिये एक मदनी बहार मुलाह्ज़ा हो। चुनान्चे, अडेरोलाल (ज़िल्अ़ मटयारी, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 42 साल) का बयान है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में शामिल होने से पहले मैं अपने गोठ का वडेरा था, गवर्नमेन्ट की मुलाज़्मत और 45 एकड़ ज़मीन से मिलने वाली आमदनी की वज्ह से मेरे पास बहुत पैसा था जिस की वज्ह से मैं बुराइयों की दुन्या में चला गया। रोज़ाना शराब पीना, लोगों से झगड़ना मेरा मश्ग़ला था, अ़य्याशियां करना मेरा शौक़ था, लोगों की दिल आज़ारियां किया करता, वडेरा होने की वज्ह से ग़रीब मुझे डर के मारे कुछ भी नहीं कहते थे। मेरे वालिद साहि़ब का कई बरस पहले इन्तिक़ाल हो चुका था, मुझ से बड़े और छोटे दोनों भाई मेरी इस ह़ालत से तंग थे उन्हें रोज़ाना मेरी शिकायतें मिला करतीं। मैं पूरी पूरी रात अ़य्याशी की मह़फ़िलों में गुज़ार देता फिर यार दोस्त नशे की ह़ालत में मुझे गोठ छोड़ जाया करते।

मेरी क़िस्मत यूं जागी कि मेरे एक शनासा इस्लामी भाई मुझे सात आठ साल से मुल्तान में होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दिया करते मगर मैं इन्कार कर देता। 2005 ईसवी के इजतिमाअ़ में उन्हों ने मुझे दा'वत दी तो मैं ने हां कर दी कि चलो थोड़ा घूम फिर भी आएंगे। मगर जब इजतिमाअ़ में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ की रिक़्क़त अंगेज़

www.dawateislami.net

दुआ़ सुनी तो मेरे होश उड़ गए और मैं फूट फूट कर रोने लगा कि मैं ने इतना वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया ! इस के बा'द मैं ने 2007 ईसवी में टन्डो आदम (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में 30 दिन का ए'तिकाफ़ किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ चेहरे पर दाढ़ी भी सजा ली और गुनाहों से तौबा कर ली, **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाई, मैं ने 45 एकड़ ज़मीन का इन्तिज़ाम भी बड़े भाई को सोंप दिया और उन्ही को वडेरे पन के काम भी सोंप दिये। दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते करते मुझे अ़लाक़ाई मुशावरत का ख़ादिम (निगरान) बनने की सआ़दत भी नसीब हुई।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल   है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा मदनी माह़ोल
ब फ़ैज़ाने अह़मद रज़ा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ   येह फूले फलेगा सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ख़्मी होते ही हंस पड़ीं (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़े मौसुली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى की अहलियए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا एक मरतबा ज़ोर से गिरीं जिस से नाखुन मुबारक टूट गया, लेकिन दर्द से "हाए हू" करने के बजाए हंसने लगीं !! किसी ने पूछा : क्या ज़ख़्म में दर्द नहीं हो रहा ? फ़रमाया : "**सब्र के बदले में हाथ आने वाले सवाब की ख़ुशी में मुझे चोट की तक्लीफ़ का ख़याल ही न आ सका।**"

(اَلْمُجالَسة لِلدِّيْنَوَرِى ج ٣ ص ١٣٤)

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	فیض القدیر	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٢ھ
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
تفسیر نسفی	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢١ھ	تنویر الابصار	دار المعرفۃ، بیروت، ١٤٢٠ھ
تفسیر ابن ابی حاتم	مکتبۃ نزار مصطفی الباز، مکۃ المکرمۃ، الریاض ١٤١٧ھ	درمختار	دار المعرفۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
روح البیان	کوئٹہ	رد المحتار	دار المعرفۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	الحدیقۃ الندیۃ	پشاور
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	غنیۃ المتملی	سہیل اکیڈمی، لاہور
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ	غمز عیون البصائر	باب المدینہ کراچی ١٤١٨ھ
صحیح مسلم	دار ابن حزم، بیروت ١٤١٩ھ	فتاوی ہندیہ	دار الفکر بیروت ١٤٠٣ھ
سنن الترمذی	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ	فتاوی رضویہ (مخرجہ)	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ١٤١٨ھ
سنن ابی داود	دار احیاء التراث، بیروت ١٤٢١ھ	رسائل نعیمیہ	نعیمی کتب خانہ، گجرات
سنن نسائی	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٦ھ	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
ابن ماجہ	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ	اسلامی بہنوں کی نماز	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مؤطا	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ	الشفا	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ١٤٢٣ھ
مسند احمد	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ	الریاض النضرۃ	دار الکتب العلمیہ بیروت
مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ	سعادۃ الدارین	دار الکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٢ھ
معجم کبیر	دار احیاء التراث، بیروت ١٤٢٢ھ	منہاج القاصدین	دار التوفیق، دمشق ١٤٣١ھ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ	عیون الحکایات	دار الکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٤ھ
صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٧ھ	ادب الدنیا والدین	دار الکتب العلمیہ بیروت ١٤٠٨ھ
موارد الظمآن	دار الکتب العلمیۃ	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ، تہران
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریۃ، بیروت ١٤٢٦ھ	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مسند الفردوس	دار الفکر، بیروت ١٤١٨ھ	روض الفائق	کوئٹہ
تاریخ دمشق	دار الفکر، بیروت ١٤١٥ھ	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی، بیروت ١٤٢٠ھ
مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٤ھ	کتاب الکبائر	پشاور، پاکستان
مجمع الزوائد	دار الفکر، بیروت ١٤٢٠ھ	کتاب التوابین	دار الکتب العلمیہ بیروت ١٤٠٧ھ
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٥ھ	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ ١٣٧٩ھ
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ ١٤٢١ھ	مستطرف	دار الفکر، بیروت ١٤١٩ھ
کنز العمال	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ	جہنم کے خطرات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٨ھ	غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
بحر الفوائد المشہور بمعانی الاخبار	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٠ھ	شیطان کے بعض ہتھیار	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ	شیطان کی حکایات	مکتبۃ فرید بک سٹال، لاہور
شرح البخاری لابن بطال	مکتبۃ الرشد، الریاض	رہبر زندگی مع طب نبوی	گنج شکر، پرنٹرز، لاہور
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
التیسیر	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ١٤٠٨ھ	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
फ़िरिश्तों की ज़ियारत	1	मेरी हिजरत माल के लिये नहीं थी (हिकायत)	30
लकड़ी का बॉक्स (हिकायत)	2	रिया की वज्ह से नेकी न छोड़े	31
इस्लाम को छोड़ देना (इर्तिदाद)	4	क्या दीनी ख़िदमत पर तनख़्वाह लेने से सवाब	
चार क़िस्म के लोग	5	कम हो जाता है ?	32
बन्दा उस पर उठाया जाएगा जिस पर मरेगा	6	उ़ज्ब व खुद पसन्दी	33
आग के सन्दूक़	7	खुद पसन्दी की अहम वज़ाहत	34
फिर तुम क्या करते (हिकायत)	8	बेहतर है कि सारी रात सोया रहूं	35
बारगाहे रिसालत में बे अदबी	8	नेक कामों की तौफ़ीक़ मिलना ने'मत है	35
वोह अहले जन्नत से हैं (हिकायत)	10	खुद पसन्दी का इलाज	36
दरबारे रिसालत के आदाब रब्बे काइनात		बद अख़्लाक़ी	38
ने बयान फ़रमाए	11	बीवी की बद अख़्लाक़ी बरदाश्त करने का	
ह़यात व वफ़ात में कुछ फ़र्क़ नहीं	12	तरीक़ा (हिकायत)	39
इ़ज़्ज़त व हुर्मत आज भी वैसी है (हिकायत)	13	बद अख़्लाक़ क़ाबिले रह़्म है (हिकायत)	40
एह़सान जताना	15	तर्के नमाज़	40
जन्नत में नहीं जाएगा	15	नमाज़े अ़स्र की ख़ास ताकीद	41
एह़सान का बदला चुकाया (हिकायत)	16	ज़मीन से दीनार निकालने वाला नमाज़ी (हिकायत)	42
ह़सद नेकियों को खा जाता है	17	बे सब्री	45
ह़सद के मारे यहूदियों ने झूट बोला (हिकायत)	18	मुसीबत पर सब्र का इन्आ़म	46
महंगाई की तमन्ना करना	19	सवाब की रग़बत रखो	46
एक के बदले दस (हिकायत)	20	मह़मूद व अयाज़ और ककड़ी की क़ाश (हिकायत)	47
चालीस दिन ग़ल्ला रोकना	22	बेटे की वफ़ात पर उ़म्दा कपड़े (हिकायत)	47
पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना	23	अ़मल को बरबाद करने वाली छे चीज़ें	48
पीप और ख़ून में रखेगा	24	ऐ़ब न ढूंडो	49
हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा (हिकायत)	24	ऐ़बों के पीछे न पड़ो	50
रियाकारी	25	गुनाह झड़ते दिखाई देते थे (हिकायत)	51
आ'माल रद हो जाएंगे	26	पसन्दीदा बन्दा	52
उस का अ़मल बरबाद हो गया	26	अपनी आंख में शहतीर दिखाई नहीं देता	52
बरोज़े क़ियामत नदामत का सामना	26	मुसलमानों के उ़यूब तलाश करने की सज़ा	52
रियाकारों का अन्जाम	27	क़सावते क़ल्बी	53
हमारा क्या बनेगा ?	29	दिल की सख़्ती का एक इलाज	54

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा
दुन्या की मह़ब्बत	54	6 अहम मदनी फूल	75
दुन्या की मह़ब्बत तमाम बुराइयों की जड़ है	55	मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों को	
आख़िरत को नुक़्सान पहुंचता है	55	नसीह़त (ह़िकायत)	78
दुन्या की ह़ैसिय्यत	55	ग़ीबत	79
फ़ना हो जाने वाली को तरजीह़ न दो (ह़िकायत)	55	वालिदैन मेरी नेकियों के ज़ियादा ह़क़दार हैं	79
कौन सी दुन्या अच्छी ?	57	मेरी नेकियां कहां गईं ?	80
माले दुन्या ने रुला दिला (ह़िकायत)	58	माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी !	80
ह़या	59	अपनी बुराइयां याद कर लिया करो	81
शरई ह़या किसे कहते हैं ?	59	एक सुवाल के 2 जवाब ! (ह़िकायत)	81
कसरते ह़या से मन्अ़ मत करो	60	उस का अ़मल बेकार हो गया	82
ह़या ज़ीनत देती है	60	मेरा रोज़ा भी है (ह़िकायत)	82
जो चाहो करो	60	सवाब कम नहीं होता	82
ह़या कैसी हो ?	61	न किसी वाह की ख़्वाहिश न किसी आह का ग़म	83
शब बेदारी शुरूअ़ फ़रमा दी (ह़िकायत)	62	बिला इजाज़ते शरई कुत्ता पालना	83
लम्बी उम्मीद	62	कुत्ता पालना कब जाइज़ है ?	84
लम्बी उम्मीदों के अस्बाब	63	लड़ाने या दौड़ाने के लिये कुत्ता न पाला जाए	85
तुम्हें दूसरी नमाज़ पढ़ने को मिलेगी ? (ह़िकायत)	65	आपस का फ़साद	85
जिस्म बूढ़ा मगर उम्मीद जवान (ह़िकायत)	65	शैत़ान की उंगली (ह़िकायत)	86
रोज़ाना मौत की तय्यारी (ह़िकायत)	65	नुजूमी के पास जाना	87
तुम रात तक ज़िन्दा रहोगे ? (ह़िकायत)	66	नुजूमी को हाथ दिखाना कैसा ?	88
उम्मीद काम भी करवाती है (ह़िकायत)	66	शौहर की नाशुक्री करना	89
ज़ुल्म	67	ह़राम माल कमाना	90
एक की क़बूल हो और हज़ारों की न हो ! (ह़िकायत)	68	ह़लाल खाना इस्लाह़ के लिये ज़रूरी है	90
कीना	69	ह़राम के एक दिरहम का असर	91
कीना किसे कहते हैं ?	69	दुआ़ क़बूल न होने का सबब (ह़िकायत)	91
दीगर गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है	70	माले ह़राम से जान छुड़ा लीजिये	92
गोशा नशीनी की वज्ह (ह़िकायत)	71	माले ह़राम से नजात का त़रीक़ा	93
मस्जिद में दुन्या की बातें करना	72	फ़र्ज़ के बा'द सुन्नतें पढ़ने में ताख़ीर करना	93
उन को अल्लाह से कुछ काम नहीं	73	सुन्नते क़ब्लिय्या का दोबारा पढ़ लेना बेहतर है	94
मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है	73	सुन्नते बा'दिय्या की 3 सुन्नतें	95
मस्जिद से सर बाहर निकाल कर जवाब		नमाज़ी के आगे से गुज़रना	95
दिया (ह़िकायत)	74	सुतरे के मदनी फूल	96
दो अहम सुवाल जवाब	74	वडेरे की तौबा	98

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133006

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net